अक्टूबर क्रांति और बोल्शेविकों की कार्यनीति

रूसी क्रांति रूसी मजदूर वर्ग की शानदार कार्यवाही थी। यह जनता की क्रियाशीलता और रचनात्मकता की असीम संभावनाओं का जीता जागता प्रमाण था। रूस के लाखों करोड़ों मजदूरों और किसानों ने इस क्रांति के द्वारा साबित किया कि जनता स्वयं अपनी तकदीर लिख सकती है। रूसी क्रांति ने शोषकों और जनता के गद्दारों तक को भी जनता का लोहा मानने को बाध्य किया।

वैसे तो विचार और चेतना के बगैर कोई क्रांति नहीं होती। लेकिन रूसी क्रांति सचेतनता के मामले में उस समय तक हुई सभी क्रांतियों से काफी आगे थी। इस क्रांति में हिस्सेदारी कर रहे वर्ग किसी काल्पनिक लक्ष्य या झूठी आशा में संघर्ष के मैदान में नहीं कूदे थे बल्कि क्रांतिकारी वर्गों का बड़ा हिस्सा अतीत और भविष्य की साफ तस्वीर लिए हुए था। क्रांति के समय रूस के मजदूरों और किसानों की राजनीति पर पकड़ घाघ राजनीतिज्ञों तक को चकित कर देती थी।

लेकिन रूस के मजदूरों और किसानों के भीतर ये क्षमता कैसे आई। रूस की कम्युनिस्ट पार्टी (1918 तक इस पार्टी का नाम रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी था), जो कि इतिहास में बोल्शेविक पार्टी के नाम से भी जानी जाती है, के बगैर रूसी जनता इन क्षमताओं को हासिल नहीं कर सकती थी। बोल्शेविक पार्टी की न सिर्फ मार्क्सवाद पर मजबूत पकड़ थी, बल्कि रूसी समाज और रूसी जनता को वे पूरी गहराई से जानते थे। इसी के दम पर बोल्शेविकों ने रूसी क्रांति की सही कार्यनीति विकसित की जिसने न केवल रूस को शोषण से मुक्त किया बल्कि आगे आने वाली सभी क्रांतियों के लिए मार्गदर्शक का काम किया। बोल्शेविक पार्टी द्वारा रूसी क्रांति की सही कार्यनीति का सूत्रीकरण विचारधारा और राजनीति के क्षेत्र में बोल्शेविक पार्टी के संघर्ष से जुड़ा रहा है। इसी वजह से रूसी क्रांति की कार्यनीति का अध्ययन किसी हद तक बोल्शेविक पार्टी द्वारा विभिन्न चरणों में चलाऐ गए विचारधारात्मक-राजनीतिक संघर्षों का अध्ययन भी बन जाता है।

I

रूस का मार्क्सवाद से परिचय यूरोप के अन्य देशों की तुलना में देरी से हुआ। मार्क्सवाद को रूस में स्थापित होने के लिए पहला संघर्ष नरोदवाद से लड़ना पड़ा। नरोदवादी रूस से जारशाही व्यवस्था और जमींदारी प्रथा का खात्मा चाहते थे। इसके लिए उनकी उम्मीदें किसानों पर टिकी थीं। नरोदवादी पारंपरिक ग्रामीण कम्यूनों के माध्यम से समाजवाद तक जाने का सपना देखते थे। वे पूंजीवाद को रूस के लिए आकस्मिक वस्तु मानते थे। उन्हें लगता था कि पूंजीवाद को रूस में आने से रोका जा सकता था। नरोदवादी जारशाही के खात्मे में मजदूर वर्ग की कोई भूमिका नहीं देखते थे। इसलिए न वे मजदूरों को संगठित करते थे, न ही मजदूरों के संघर्षों में काई रुचि लेते थे। वे जनता को निष्क्रिय भीड़ मानते थे जो कि हमेशा ही वीरों से अभीभूत होकर संघर्ष के मैदान में खिंचती है। 1880 के दशक की शुरुआत तक रूस का बुद्धिजीवी वर्ग नरोदवादी विचारों के प्रभाव में डूबा हुआ था।

रूस का पहला मार्क्सवादी संगठन 'श्रमिक मुक्ति दल' 1883 में प्लेखानोव द्वारा विदेश में स्थापित किया गया। यह संगठन मार्क्सवादी रचनाओं का रूसी अनुवाद जारशाही की नजरों से बचाकर रूस में भिजवाता था। साथ ही, इसने नरोदवादी विचारों के खिलाफ संघर्ष छेड़ दिया। प्लेखानोव ने नरोदवाद के खिलाफ कई पुस्तकें लिखीं, जिन्हें पढ़कर रूसी मार्क्सवादियों की एक पूरी पीढ़ी तैयार हुई।

प्लेखानोव और श्रमिक मुक्ति दल ने दिखाया कि मानव समाज का विकास कुछ निश्चित नियमों के तहत होता है। जिसको मनमाने तरीके से नहीं बदला जा सकता है। इसके तहत रूस पूंजीवाद की मंजिल से बच तो नहीं ही सकता, बल्कि रूस में पूंजीवाद का विकास हो भी रहा था। इसने जिस मजदूर वर्ग को जन्म दिया है, वह किसानों की तुलना में ज्यादा क्रांतिकारी था। इन्होंने दिखाया कि ग्रामीण कम्यूनों के माध्यम से समाजवाद तक नहीं जाया जा सकता, क्योंकि इन पर धनी किसान हावी थे। यह गरीब किसानों पर धनी किसानों के प्रभुत्व को बखूबी छिपा जाता था। साथ ही, प्लेखानोव ने स्पष्ट किया कि इतिहास का निर्माण वीरों या महापुरुषों के द्वारा नहीं होता बल्कि उत्पादन व्यवस्था में होने वाली तबदीलियों की वजह से पूरे सामाजिक ढांचे को ध्वस्त कर नए सामाजिक ढांचे के निर्माण की ऐतिहासिक जरूरत के द्वारा होता है। इतिहास ही इन जरूरतों को पूरा करने वाले वीर या महापुरुषों को पैदा करता है। वीर या महापुरुष उसी हद तक इतिहास निर्माण में कोई भूमिका निभा पाते हैं जिस हद तक उनके विचार और कार्यवाही इतिहास की गति के अनुकूल होती है।

प्लेखानोव और श्रमिक मुक्ति दल के नरोदवाद के खिलाफ संघर्ष के नतीजे के बतौर क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों पर नरोदवाद का प्रभाव काफी कम हो गया। जिन बुद्धिजीवियों ने नरोदवाद का परित्याग नहीं किया, उन्होंने भी क्रमशः जारशाही के खिलाफ संघर्ष छोड़कर उससे मेलमिलाप की नीति अपना ली और धनी किसानों के हिमायती बन गये। रूस के भीतर मार्क्सवाद की स्वीकार्यता बढ़ने की वजह से कई मार्क्सवादी समूह अस्तित्व में आ गये।

लेकिन, श्रमिक मुक्ति दल ने कुछ गंभीर गलतियां भी कीं। ये किसानों के ऊपर मजदूर वर्ग की नेतृत्वकारी भूमिका को नहीं देख पाये। साथ ही, रूसी उदारपंथी पूंजीपति वर्ग की कमजोरियों और सीमाओं को वे नहीं समझ पाये। श्रमिक मुक्ति दल और शुरुआती मार्क्सवादी समूहों का मजदूर आंदोलन से कोई व्यावहारिक संबंध नहीं था। इन कमियों को ठीक करने की जिम्मेदारी लेनिन को उठानी पड़ी।

1893 में सेंट पीटर्सबर्ग आने के बाद लेनिन ने मार्क्सवादी समूहों में भागीदारी करने के साथ-साथ आगे बढ़े हुए मजदूरों के माध्यम से मजदूर आंदोलन के साथ संबंध कायम करने शुरू किये। 1895 में लेनिन ने सेंट पीटर्सबर्ग के लगभग 20 मार्क्सवादी समूहों को मिलाकर 'मजदूर वर्ग के मुक्ति संग्राम का संघ' बनाया। लेनिन के प्रयासों से यह रूस की पहली संस्था थी जो समाजवाद को मजदूर वर्ग से जोड़ने का काम करती थी। यह कारखानों के संबंध में आर्थिक भंडाफोड़ करते हुए पर्चा निकालती थी और उचित मांगें पेश करती थी। 1895 में लेनिन ने थार्नटन मिल के हड़तालियों के लिए पर्चा लिखा। इस मिल में काम के घंटे काफी अधिक और मजदूरी काफी कम थी। मुक्ति संग्राम संघ ने इस तरह के दर्जनों पर्चे और अपीलें विभिन्न कारखानों के मजदूरों के लिए छापी। लेनिन जेल से भी पर्चे-पुस्तिकाएं लिखकर और जरूरी सलाह मशविरा के द्वारा मुक्ति संग्राम संघ की मदद करते रहते थे। लेनिन के नेतृत्व में मुक्ति संग्राम संघ रूसी मार्क्सवादी आंदोलन के उस मोड़ का परिचायक है जब यह प्रचार मंडली से आगे बढ़कर जनआंदोलन की तरफ मुड़ा। मजदूर आंदोलन से जीवंत संबंध कायम किये बगैर न तो मजदूर वर्ग की पार्टी बन सकती थी और न ही क्रांतिकारी कार्यक्रम।

1903 में एक निश्चित कार्यक्रम पर आधारित पार्टी गठित होने से पहले लेनिन के नेतृत्व में रूसी मार्क्सवादियों को बारी बारी से तीन प्रमुख सैद्धान्तिक प्रवृत्तियों-नरोदवाद, कानूनी मार्क्सवाद और अर्थवाद को पराजित करना पड़ा। यद्यपि प्लेखानोव ने 1880 के दशक की शुरुआत में ही नरोदवाद के खिलाफ संघर्ष चलाकर इसके प्रभाव को काफी कम कर दिया था, लेकिन 1890 तक नरोदवाद का कुछ असर बचा रहा। नरोदवादी विचारकों के हमले के निशाने पर मार्क्सवादी आ गये थे। वे मार्क्सवाद के बारे में भ्रम फैलाकर मार्क्सवाद के प्रसार को रोकने की कोशिश करते थे। वे रूसी मार्क्सवादियों की बातों को तोड़ते-मरोड़ते थे और झूठा प्रचार करते थे कि मार्क्सवादी लोग चाहते हैं कि गांव के लोग बर्बाद हो जायें और किसानों को कारखानों की भट्ठियों में झोंक दिया जाये।

नरोदवादी अपने आप को 'जनता का मित्र' कहते थे लेकिन वास्तव में वे जनता के शत्रु थे। अपनी पुस्तक " 'जनता के मित्र क्या हैं और वे सामाजिक जनवादियों से कैसे लड़ते हैं?" (1894) तथा "रूस में पूंजीवाद का विकास" (1899) में लेनिन ने नरोदवादियों के विचारों का पर्दाफाश किया। लेनिन ने दिखाया कि सवाल मार्क्सवादियों की चाहत का नहीं है, बल्कि वास्तविकता का है। असलियत यह है कि पूंजीवाद रूस में लगातार विकसित हो रहा है। लेनिन ने बताया कि सवाल पूंजीवाद को रोकने का नहीं, बल्कि यह जिस मजदूर वर्ग को जन्म दे रहा और बढ़ा रहा है उसकी ताकत को पहचानने का है। लेनिन ने ही पहली बार मजदूरों और किसानों के क्रांतिकारी सहयोग से जारशाही, जमींदारों और पूंजीपतियों के गठजोड़ को पराजित करने का विचार रखा। इसी दौर की रचनाओं में लेनिन ने नरोदवादियों के राजनीतिक संघर्ष के गलत तरीकों खास तौर पर 'व्यक्तिगत आतंकवाद' की भी आलोचना की। लेनिन का कहना था कि इन तरीकों से जनता के संघर्ष का स्थान अलग-अलग वीरों का संघर्ष ले लेता है और यह जनता में भरोसे की कमी को दिखाता है। नरोदवाद के खिलाफ लेनिन के नेतृत्व में रूसी मार्क्सवादियों के संघर्ष ने विचारधारा के क्षेत्र में नरोदवाद को पूरी तरह हरा दिया।

रूस में मार्क्सवाद के तेजी से प्रचारित-प्रसारित होने के बाद ढेर सारे पूंजीवादी बुद्धिजीवी भी अपने को मार्क्सवादी कहने लगे। ये अपनी रचनाएं जारशाही की अनुमति से कानूनी प्रकाशनों से छपवाते थे। इसलिए ये 'कानूनी मार्क्सवादी' कहलाए। नरोदवाद के खिलाफ लड़ाई में लेनिन ने इनके साथ कार्यनीतिक मोर्चा बनाया और नरोदवाद का खंडन करने के साथ-साथ 'कानूनी मार्क्सवादियों' की कमियों को भी वे उजागर करते रहे।

'कानूनी मार्क्सवादी' नरोदवादियों से लड़ते हुए मजदूर आंदोलन को पूंजीपति वर्ग के हित के साथ नत्थी करना चाहते थे। वे मार्क्सवाद की क्रांतिकारी आत्मा को गायब कर देते थे। उनके मार्क्सवाद में सर्वहारा क्रांति और सर्वहारा अधिनायकत्व नहीं होता था। वे उदारपंथी पूंजीपति वर्ग की तारीफों के पुल बांधते थे। स्त्रूवे नाम का एक प्रमुख 'कानूनी मार्क्सवादी' कहता था कि 'हम इस बात को मानें कि संस्कृति की हममें कमी है और शिक्षा पाने के लिए हम पूंजीवाद के पास जायें'।

'कानूनी मार्क्सवादी' क्रांति के एक खास दौर के सहयात्री थे। जब तक रूस में नरोदवाद का प्रभाव मौजूद था, तब तक विचारधारात्मक तौर पर मार्क्सवाद को स्थापित करने में इसने सहयोगी की भूमिका निभाई। लेकिन नरोदवाद के असर के समाप्त हो जाने के बाद इनकी वजह से मार्क्सवाद के विकृतिकरण का खतरा पैदा हो गया। जिस दौरान लेनिन और मुक्ति संग्राम संघ के पुराने मार्क्सवादी जेल और निर्वासन में थे, उस बीच मुक्ति संग्राम संघ में आये नये लोगों पर 'अर्थवाद' नाम की प्रवृत्ति का काफी असर था। 'कानूनी मार्क्सवादियों' की रचनाओं के माध्यम से मार्क्सवाद की समझ हासिल करने की वजह से ये लोग अर्थवाद के गहरे असर में आ जाते थे। इस्क्रा के कॉलमों और 'क्या करें?' पुस्तक में लेनिन द्वारा अर्थवाद के खिलाफ चलाया गया संघर्ष प्रकारान्तर से 'कानूनी मार्क्सवाद' का भी खंडन था।

अर्थवादी स्वयंस्फूर्ति की पूजा करते थे। उनका कहना था कि मजदूरों को आर्थिक संघर्ष करना चाहिए और राजनीतिक संघर्ष का काम उदारपंथी पूंजीपतियों के लिए छोड़ देना चाहिए। वे मजदूर वर्ग के बीच बाहर से राजनीतिक चेतना देने का विरोध करते थे और कहते थे कि मजदूरों के भीतर राजनीतिक चेतना, यहां तक कि समाजवाद की भी चेतना आर्थिक संघर्षों के द्वारा अपने आप पैदा हो जायेगी। वे मानते थे कि सामाजिक जनवादियों को अपना काम मजदूरों द्वारा चलाये जा रहे आर्थिक संघर्षों के अध्ययन और उसकी

अच्छाइयों के गुणगान करने तक सीमित रखना चाहिए। वे मजदूर आंदोलन द्वारा स्वयंस्फूर्त तरीके से अपनाये जा रहे मार्गों से हटाए जाने के किसी भी प्रयास का विरोध करते थे। वे मजदूर वर्ग की पार्टी की हिरावल की भूमिका से इंकार करते थे। इसलिए, किसी सुगठित केन्द्रीकृत पार्टी बनाने के प्रयास का विरोध करते थे।

लेनिन की किताब 'क्या करें?' में लेनिन ने अर्थवादियों के जिन तर्कों का खंडन किया उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

(अर्थवादियों के विपक्षी) "विकास के वस्तुगत अथवा स्वयंस्फूर्त तत्व के महत्व को कम करके आंकते हैं।"

"... ... ... मजदूर आंदोलन की शक्ति का कारण यह है कि मजदूर अंततः अपनी किस्मत को नेताओं के हाथों से खुद अपने हाथों में ले रहे हैं।"

"राजनीतिक लक्ष्य को कभी न भूलने के प्रयत्न में आंदोलन का आर्थिक आधार पृष्ठभूमि में पड़ जाता है।"

(मजदूर आंदोलन का मुख्य नारा यह है कि) "आर्थिक परिस्थितियों के लिए लड़ो"

"मजदूरों के साथी मजदूर हैं"

"आंदोलन के लिए" (हड़ताल फंड) "दूसरे सौ संगठनों से अधिक मूल्यवान होते हैं।"

"सबसे अच्छे" (मजदूर पर नहीं, बल्कि आम) "औसत" (मजदूरों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिए)

"राजनीति सदा आज्ञाकारी भाव से अर्थनीति के पीछे-पीछे चलती है।"

"(मजदूरों को) "यह समझकर लड़ना चाहिए कि वे किसी भावी पीढ़ी के लिए नहीं, बल्कि स्वयं अपने लिए और अपने बच्चों के लिए लड़ रहे हैं।"

"योजना- के-रूप-में- कार्यनीति की बात मार्क्सवाद की मौलिक भावना के खिलाफ है"

"(कार्यनीति तो) "पार्टी कार्यभारों के, जो पार्टी विकास के साथ-साथ चलते हैं, विकास की प्रक्रिया है"

"मजदूर वर्ग का राजनीतिक संघर्ष महज आर्थिक संघर्ष का ही सबसे विकसित, सबसे व्यापक और सबसे कारगर रूप है"

" सामाजिक जनवादी कार्यकर्ताओं के सामने अब यह कार्यभार है कि, जहां तक संभव हो, वे आर्थिक संघर्ष को ही राजनीतिक रूप दें"

"आर्थिक संघर्ष जनता को सक्रिय राजनीतिक संघर्ष में खींचने का वह तरीका है, जिसका सबसे अधिक व्यापक रूप में उपयोग किया जा सकता है"

"जैसे ही सरकार पुलिस और राजनीतिक पुलिस को मजदूरों के खिलाफ इस्तेमाल करने लगती है", "जनता एक या अधिक से अधिक चंद हड़तालों के बाद तात्कालिक राजनीतिक मांगों को समझने लगती है"

"इस प्रकार की मांगे कोरी नारेबाजी नहीं होंगी, क्योंकि उनसे कोई ठोस नतीजे निकलने की उम्मीद होने की वजह से मजदूर जन-साधारण उनका सक्रिय समर्थन कर सकते हैं"

"अपने तात्कालिक क्रांतिकारी महत्व के अलावा मालिकों तथा सरकार के खिलाफ मजदूरों के आर्थिक संघर्ष का यह महत्व भी है कि वह लगातार मजदूरों को अपने राजनीतिक अधिकारों के अभाव के बारे में सोचने की प्रेरणा देता है"

"इसलिए स्पष्ट है कि हम, सामाजिक जनवादी कार्यकर्ता, विरोध पक्ष के विभिन्न स्तरों की सक्रिय गतिविधि का एक साथ संचालन नहीं कर सकते, हम उनके लिए काम का एक सकारात्मक कार्यक्रम निर्दिष्ट नहीं कर सकते, हम उनसे यह नहीं कह सकते कि अपने हितों के लिए उन्हें हर दिन किस तरह लड़ना चाहिए ... ... उदारपंथी हिस्से अपने तात्कालिक हितों के लिए सक्रिय संघर्ष का खुद संचालन कर लेंगे और यह संघर्ष उन्हें हमारी राजनीतिक व्यवस्था के आमने-सामने लाकर खड़ा कर देगा"

"एक अखिल रूसी अखबार के पाठकों को अपने शहर के अलावा दूसरे शहरों के कारखानों के मालिकों के हथकंडों के बारे में तथा "अपने शहर के अलावा दूसरे शहरों की फैक्टरियों के अंदर की जिंदगी का विस्तृत विवरण" पढ़ना बिलकुल दिलचस्प नहीं लगेगा, लेकिन "एक ओर्योल निवासी ओर्योल शहर के मामलात के बारे में पढ़ने से कभी नहीं ऊबेगा।"

"आकर्षक एवं पूर्ण विचारों के प्रचार की तुलना में नीरस दैनिक संघर्ष की प्रगति के महत्व को कम करके आंकने की जो प्रवृत्ति ईस्क्रा में दिखाई पड़ती है, वह... ... ... पार्टी के संगठन की उस योजना के रूप में अपनी चरम सीमा पर पहुंच गयी, जो ईस्क्रा के अंक 4 में कहां से शुरू करें? शीर्षक लेख में प्रस्तुत की हुई है"

"जिस अखबार को केवल प्रचार का एक साधन होना चाहिए, वह पूरे व्यावहारिक क्रांतिकारी संघर्ष के नियमों की रचना करने वाला एक अनियंत्रित तानाशाह बन जाना चाहता है"

अर्थवादियों के सुंदर लगने वाले तर्कों को लेनिन ने पूरी हिकारत के साथ खंडित किया। लेनिन ने दिखाया कि अर्थवाद का सार वही है जो अंतर्राष्ट्रीय बर्नस्टीनवादी संशोधनवाद का है। ये संशोधनवादी आलोचना की स्वतंत्रता के नाम पर मार्क्सवाद की क्रांतिकारी आत्मा को नष्ट करना चाहते हैं। मजदूर आंदोलन के ऊपर पूंजीवादी विचारधारा का प्रभाव कायम करने वाली इस प्रवृत्ति के खिलाफ लेनिन अपनी पुस्तक 'क्या करें?' में कहते हैं :

"सभी देशों का इतिहास यह बताता है कि मजदूर वर्ग अपने प्रयत्नों से केवल ट्रेड-यूनियन चेतना पैदा करने में सफल होता है, याने यह धारणा पैदा कर पाता है कि यूनियनों के रूप में अपना संगठन करना, मालिकों से लड़ना और आवश्यक श्रम कानून बनवाने के लिए सरकार पर दबाव डालना जरूरी है, इत्यादि।" (पृष्ठ-46-47, क्या करें?, लेनिन दूसरा संस्करण, प्रगति प्रकाशन)

"जो कोई भी मजदूर आंदोलन की स्वयं स्फूर्ति की पूजा करता है, जो कोई भी "सचेतन तत्वों" की भूमिका को सामाजिक जनवाद की भूमिका को कम करके आंकता है, **वह चाहे ऐसा करना चाहता हो या न चाहता हो, पर असल में वह मजदूरों पर बुर्जुआ विचारधारा के असर को मजबूत करता है।** (पृष्ठ-56, वही जोर मूल में)

"चूंकि स्वतंत्र, खुद आम मजदूरों द्वारा अपने आंदोलन की प्रक्रिया के दौरान विकसित विचारधारा का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता, इसलिए **केवल ये रास्ते** ही रह जाते हैं : या तो बुर्जुआ विचारधारा को चुना जाये या समाजवादी विचारधारा को। बीच का कोई रास्ता नहीं है। ... ... अतएव समाजवादी विचारधारा के महत्व को **किसी भी** तरह कम करके आंकने, उससे **जरा भी मुंह मोड़ने** का मतलब बुर्जुआ विचारधारा को मजबूत करना होता है। (पृष्ठ- 58, वही, जोर मूल में)

"पाठक प्रश्न करेंगे कि आखिर स्वयंस्फूर्त आंदोलन का, कम से कम विरोध के मार्ग पर विकसित होने वाले आंदोलन का यह परिणाम क्यों होता है कि बुर्जुआ विचारधारा का प्रभुत्व हो जाता है? इसका कारण केवल यह है कि उत्पत्ति की दृष्टि से बुर्जुआ विचारधारा समाजवादी विचारधारा से बहुत पुरानी है, वह अधिक विकसित है और उसे फैलने की **कहीं** अधिक सुविधाएं मिली हुई हैं।" (पृष्ठ-60, वही, जोर मूल में)

"उस राजनीतिक संघर्ष को ... ... पूरी तरह मानते हुए भी, जो खुद मजदूर आंदोलन में से स्वयंस्फूर्त ढंग से पैदा होता है, वह समाजवाद के आम कार्यभारों तथा रूस की वर्तमान परिस्थितियों के मुताबिक **स्वतंत्र रूप से** एक ठेठ **सामाजिक जनवादी नीति निर्धारित करने** से सरासर इन्कार करता है।" (पृष्ठ-62, वही, जोर मूल में)

"जनव्यापी आंदोलन एक अत्यधिक महत्वपूर्ण परिघटना है, यह तथ्य विवाद से परे है। किंतु मूल प्रश्न यह है कि मजदूर वर्ग के जनव्यापी आंदोलन द्वारा "कार्यभारों को निर्धारित करने" की बात का कोई क्या मतलब लगाये। उसके दो मतलब लगाये जा सकते हैं : **या तो** उसका यह मतलब है कि हमें इस आंदोलन की स्वयंस्फूर्ति की पूजा करनी चाहिए, याने सामाजिक जनवादी संगठन की भूमिका केवल इतनी रह जानी चाहिए के वह मजदूर आंदोलन की चाटूकारी करे (राबोचाया मीस्ल, 'आत्म मुक्ति दल' और दूसरे "अर्थवादी" इसका यही अर्थ लगाते हैं); **या** उसका मतलब यह है कि जनव्यापी आंदोलन हमारे सामने ऐसे नये सैद्धान्तिक, राजनीतिक तथा संगठनात्मक कार्यभार पेश कर देता है, जो उनसे कहीं अधिक पेचीदे हैं, जिनसे हम जनव्यापी आंदोलन के उठने के पहले वाले काल में संतोष कर सकते थे। (पृष्ठ-65, वही, जोर मूल में)

"योजना-के-रूप-में-कार्यनीति की बात मार्क्सवाद की मौलिक भावना के खिलाफ है!" पर यह तो मार्क्सवाद पर लांछन है; ... ... अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक जनवादी आंदोलन का पूरा इतिहास ऐसी योजनाओं से भरा पड़ा है, जिन्हें अलग-अलग समय पर अलग-अलग राजनीतिक नेताओं ने पेश किया था। इनमें से कुछ योजनाएं ऐसी थी, जिनसे उनके रचयिताओं की दूरदर्शिता और उनके सही राजनीतिक तथा संगठनात्मक दृष्टिकोण की पुष्टि होती थी और कुछ ऐसी थीं जो अपने रचयिताओं की अदूरदर्शिता तथा गलत राजनीतिक दृष्टिकोण को स्पष्ट कर देती थीं।" (पृष्ठ-68-69, वही)

"सुधारों के लिए लड़ना क्रांतिकारी सामाजिक जनवाद की गतिविधियों में हमेशा शामिल रहा है और आज भी शामिल है। परंतु वह "आर्थिक" आंदोलन का इस्तेमाल सरकार के सामने तरह-तरह के कदम उठाने की मांग ही नहीं, बल्कि यह मांग भी (और मुख्यतया यही मांग) पेश करने के लिए करता है कि सरकार निरंकुश शासन करना छोड़ दे। इसके अलावा वह इसे अपना कर्तव्य समझता है कि यह मांग केवल आर्थिक संघर्ष के आधार पर **ही नहीं** बल्कि सार्वजनिक तथा राजनीतिक जीवन की आम तौर पर सभी अभिव्यक्तियों के आधार पर भी सरकार के सामने पेश की जाये। सारांश यह कि क्रांतिकारी सामाजिक जनवाद सुधारों के लिए संघर्ष को स्वतंत्रता और समाजवाद के क्रांतिकारी संघर्ष के अधीन उसी तरह रखता है, जैसे कोई एक भाग अपने पूर्ण के अधीन होता है। (पृष्ठ-85-86, वही, जोर मूल में)

"मजदूरों में राजनीतिक वर्ग चेतना **बाहर से ही** लायी जा सकती है, याने केवल आर्थिक संघर्ष के बाहर से, मजदूरों और मालिकों के संबंधों के क्षेत्र के बाहर से। वह जिस एकमात्र क्षेत्र से आ सकती है, वह राज्यसत्ता तथा सरकार के साथ **सभी** वर्गों तथा स्तरों के संबंधों का क्षेत्र है, वह **सभी** वर्गों के आपसी संबंधों का क्षेत्र है।
(पृष्ठ-107, वही, जोर मूल में)

"हमारे जमाने में सिर्फ वही पार्टी क्रांतिकारी शक्तियों का अग्रदल बन सकती है, जो सचमुच **देशव्यापी** पैमाने पर भंडाफोड़ों का **संगठन करेगी**। "देशव्यापी" शब्द का बहुत ही गूढ़ अर्थ है। भंडाफोड़ करने वाले गैर मजदूर लोगों में से (और अग्रदल बनने के लिए हमें दूसरे वर्गों को अपनी ओर खींचना होगा) अधिकतर संभल-संभलकर चलने वाले राजनीतिज्ञ और संतुलित दिमाग के व्यवहार-कुशल होते हैं। ... ... वे **हमारे पास** अपनी शिकायतें केवल तभी लायेंगे, जब वे देखेंगे कि उनकी शिकायतों का सचमुच कोई असर हो सकता है, कि हम किसी **राजनीतिक ताकत** के प्रतिनिधि हैं। बाहरी लोगों की नजरों में ऐसी ताकत बनने के लिए हमें खुद अपनी चेतना, पहल और उत्साह को **बढ़ाने** का काम बहुत लगन और धैर्य से करना होगा। (पृष्ठ-119-120, वही, जोर मूल में)

"... ... ... संगठन और राजनीति दोनों के बारे में "अर्थवादी" लोग हमेशा ही सामाजिक जनवाद से ट्रेड यूनियनवाद की ओर भटक जाते हैं। मालिकों तथा सरकार के खिलाफ मजदूरों के आर्थिक संघर्ष से सामाजिक जनवाद का राजनीतिक संघर्ष कहीं अधिक व्यापक और पेचीदा होता है। इसी तरह (और इसी कारण) एक क्रांतिकारी सामाजिक जनवादी पार्टी का संगठन आर्थिक संघर्ष चलाने के लिए बनाये गये मजदूरों के संगठन से अवश्यम्भावी रूप से **भिन्न ढंग** का होगा। (पृष्ठ-146, वही, जोर मूल में)

"क्रांतिकारियों के संगठन को सबसे पहले और मुख्यतया ऐसे लोगों का संगठन होना चाहिए, जिन्होंने क्रांतिकारी कार्य को अपना पेशा बना लिया हो ... ... और चूंकि यह विशेषता ऐसे संगठन के सभी सदस्यों में होनी चाहिए, इसलिए यह आवश्यक है कि न केवल **मजदूरों और बुद्धिजीवियों का भेद,** बल्कि अलग-अलग व्यवसायों तथा पेशों का **सारा अंतर**

एकदम खत्म कर दिया जाये। ऐसे संगठन के लिए जरूरी है कि वह बहुत फैला हुआ न हो तथा अधिक से अधिक गुप्त हो।" (पृष्ठ 146-47, वही, जोर मूल में)

यदि हम क्रांतिकारियों के एक मजबूत संगठन की ठोस नींव से शुरुआत करेंगे, तो हम पूरे आंदोलन के स्थायित्व की गारंटी कर सकेंगे और सामाजिक जनवादी आंदोलन तथा खास ट्रेड-यूनियन आंदोलन -दोनों- के उद्देश्यों को हासिल करने में सफल होंगे। इसके विपरीत यदि हम मजदूरों के एक व्यापक संगठन से शुरुआत करेंगे, जिसे प्रायः सबसे ज्यादा "जनता की पहुंच" के अंदर समझा जाता है (पर जो दरअसल सबसे ज्यादा राजनीतिक पुलिसवालों की पहुंच में होता है ओर जिससे क्रांतिकारी लोग सबसे ज्यादा आसानी से पुलिस के चंगुल में आ जाते हैं), तो हम इन दोनों में किसी भी उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकेंगे, अपना नौसिखुआपन दूर नहीं कर पायेंगे, और चूंकि हम बिखरे हुए रहेंगे और पुलिस बार-बार हमारी ताकत को तोड़ती जायेगी, इसलिए हमारी कोशिशों का केवल यह नतीजा निकलेगा कि जुबातोव और ओजेरोव के ढर्रे की यूनियनें सबसे ज्यादा जनता की पहुंच के अंदर हो जायेंगी। (पृष्ठ-155-156, वही, जोर मूल में)

"यदि स्थानीय पार्टी कार्यकर्ताओं को ऊपर उठा कर व्यापक विचारों, कार्यों, योजनाओं, आदि के धरातल तक **ले आने** की कोशिश का न केवल इस आधार पर कि ये विचार गलत हैं, बल्कि इस आधार पर भी विरोध किया जाये कि **"ऊपर उठाने"** की "इच्छा" ही "निंदनीय" है, तो क्या हमारी पार्टी विकसित हो सकती है और उन्नति कर सकती है? (पृष्ठ-202, वही, जोर मूल में)

"आज जबकि सामाजिक-जनवादी कार्यभारों को बहुत निचले स्तर पर लाया जा रहा है, "सजीव राजनीतिक काम" को **केवल** सजीव राजीतिक आंदोलन से ही **आरंभ** किया जा सकता है, और यह उस वक्त तक नहीं हो सकता जब तक कि हमारे पास ऐसा अखिल रूसी अखबार न हो, जो जल्दी जल्दी निकले और जिसका सही तौर पर वितरण हो। (पृष्ठ-210, वही, जोर मूल में)

लेनिन ने अपनी रचनाओं के द्वारा साबित किया कि स्वयंस्फूर्ति की पूजा, मजदूर वर्ग को आर्थिक संघर्ष तक सीमित रखना, आर्थिक संघर्षों के माध्यम से राजनीतिक चेतना विकसित होने की बात करना, सचेतन तत्वों की भूमिका को कम करके आंकना, राजनीतिक भंडाफोड़ और राजनीतिक आंदोलन को आर्थिक संघर्षो पर वरीयता न देना इत्यादि संशोधनवाद की अभिव्यक्तियां हैं और इनसे मजदूर वर्ग पर पूंजीवादी विचारधारा का प्रभुत्च कायम होता है। मजदूर वर्ग के भीतर उसके अपने वर्ग की चेतना डालना और शोषणकारी व्यवस्था का खात्मा करना मजदूर वर्ग की पार्टी का प्रमुख काम है। इस काम को करने के लिए पार्टी का सांगठनिक ढांचा मजदूर वर्ग के अन्य संगठनों (ट्रेड यूनियन आदि) से भिन्न-किस्म का होना चाहिए। पार्टी को पेशेवर क्रांतिकारियों के कोर द्वारा निर्मित, कम से कम लोगों तक सीमित और ज्यादा से ज्यादा गुप्त होना चाहिए। ऐसी पार्टी बनाने के लिए राजनीतिक सांगठनिक तैयारी करने के मकसद से एक अखिल रूसी अखबार की योजना लेनिन ने रखी।

अर्थवादियों के खिलाफ चलाए गये संघर्ष का समाहार करते हुए लेनिन अपने लेख 'समाजवाद और युद्ध' में लिखते हैं :

"एक विचारधारात्मक प्रवृत्ति के रूप में सामाजिक जनवाद 1883 में पैदा हुआ, जब रूस पर लागू सामाजिक जनवादी विचारों को पहले पहले विदेश में 'श्रम मुक्ति' दल द्वारा क्रमबद्ध ढंग से प्रतिपादित किया गया। अंतिम दशाब्दी की शुरुआत तक सामाजिक जनवाद रूस के आम मजदूर आंदोलन से बिलकुल असंबंधित केवल एक विचारधारात्मक प्रवृत्ति बना रहा। अंतिम दशाब्दी की शुरुआत में सामाजिक आंदोलन के उभार, मजदूरों की हलचल और हड़ताल आंदोलन ने सामाजिक जनवादियों को मजदूर वर्ग के संघर्ष (आर्थिक और राजनीतिक दोनों ही) के साथ अविभाज्य रूप से संबंधित एक सक्रिय राजनीतिक शक्ति बना दिया। ठीक उसी क्षण से सामाजिक जनवादी अर्थवादियों और 'इस्क्रा' -पंथियों मं विभाजित होने लगे।

(अर्थवादी और पुराना इस्क्रा, 1894-1903)

रूसी सामाजिक जनवाद के भीतर अर्थवाद एक अवसरवादी रुझान था। उसका राजनीतिक सार यह कार्यक्रम बन कर रह गया था: "मजदूरों के लिए आर्थिक संघर्ष, उदारतावादियों के लिए राजनीतिक संघर्ष"। उसके मुख्य सैद्धान्तिक आधार का नाम "कानूनी मार्क्सवाद" अथवा "स्त्रूवेवाद" या, जो हर प्रकार की क्रांतिकारिता से पूर्णतः रहित तथा उदारतावादी बुर्जुआ वर्ग की आवश्यकताओं के अनुकूल रूपांतरित "मार्क्सवाद" को "मान्यता देता था"। रूस में मजदूर समुदाय के पिछड़ेपन का हवाला देते हुए और "जनता के साथ चलने" की चाह के कारण अर्थवादी लोग मजदूर वर्ग के आंदोलन के कार्यभार तथा कार्यक्षेत्र को आर्थिक संघर्ष तथा उदारतावाद के राजनीतिक समर्थन तक ही सीमित करते थे और अपने सामने स्वतंत्र राजनीतिक अथवा कोई क्रांतिकारी कार्य नहीं रखते थे।

पुराने 'इस्क्रा' ने (1900-1903) क्रांतिकारी सामाजिक जनवाद के उसूलों के नाम पर अर्थवाद के खिलाफ कामयाब संघर्ष चलाया। वर्ग चेतन सर्वहारा के समस्त शिरोमणियों ने 'इस्क्रा' का पक्ष लिया। क्रांति से पहले बरसों तक सामाजिक जनवाद ने अधिक से अधिक सुसंगत तथा समझौताहीन कार्यक्रम पेश किया। और वर्ग संघर्ष ने, 1905 की क्रांति में जनता की कार्रवाईयों ने उस कार्यक्रम की पुष्टि कर दी। अर्थवादियों ने अपने को जनता के पिछड़ेपन के अनुकूल तब्दील कर दिया। 'इस्क्रा' मजदूरों के हरावल को शिक्षित-दीक्षित करता रहा, जो जनता को आगे ले चलने में समर्थ था।" (पृष्ठ-193-195, सं.र., लेनिन, दस खंडों में, खंड -5, प्रगति प्रकाशन, मास्को 1982)

इस तरह से अर्थवाद को विचारधारात्मक राजनैतिक तौर पर पराजित करने के बाद 1903 में रूसी सामाजिक जनवादी पार्टी की दूसरी कांग्रेस बुलाई गयी। अर्थवाद के पराजित हो जाने और इसके एक नकारात्मक प्रवृत्ति के बतौर स्थापित हो जाने की वजह से इस कांग्रेस में कोई खुले अर्थवादी नहीं थे। इस कांग्रेस में इस्क्रावादियों का बहुमत था। लेकिन इस्क्रावादियों में से कुछ कच्चे इस्क्रवादी थे जो कि ढुलमुल किस्म के क्रांतिकारी थे। इस कांग्रेस ने इस्क्रा द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम के मसौदे को पास किया। यह एक क्रांतिकारी

कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम के तहत पार्टी के दूरगामी लक्ष्यों में समाजवादी क्रांति, पूंजीपतियों की ताकत का खात्मा और सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना, तथा तात्कालिक लक्ष्यों में निरंकुश जारशाही का खात्मा, जनवादी गणतंत्र की स्थापना, आठ घंटे का कार्यदिवस, गावों में भूदास प्रथा के सभी अवशेषों का खात्मा करने और जमींदारों द्वार छीनी हुई सभी भूमि (अतरेज्की) वापस करने की चर्चा थी।

इस कांग्रेस में पार्टी नियमावली में सदस्यता की शर्त के ऊपर पक्के और कच्चे इस्क्रावादियों के बीच तीखे मतभेद खड़े हो गये। कच्चे इस्क्रावादी अपनी गलत अवस्थितियों को ठीक करने के बजाय मतभेदों को फूट तक ले गये। कांग्रेस के दौरान कई सवालों पर कच्चे इस्क्रावादियों ने, जिनका नेतृत्व मार्तोव और अक्सेलरोद कर रहे थे, इस्क्राविरोधियों के साथ ढुलमुल अवस्थितियों पर एकता कायम की। कांग्रेस के दौरान प्लेखानोव ने लेनिन का साथ दिया। लेकिन कांग्रेस के बाद जब मार्तोव आदि फूट की कार्यवाही करने लगे तो प्लेखानोव भी उनके खेमे में चले गये और लेनिन के खिलाफ हमला बोल दिया। कांग्रेस में बाद की कार्यवाहियों के दौरान इस्क्राविरोधियों के कांग्रेस छोड़कर चले जाने के बाद कांग्रेस में पक्के इस्क्रावादियों का बहुमत कायम हो गया और इससे इनका नाम बोल्शेविक पड़ा और कच्चे इस्क्रावादी अल्पमत में होने की वजह से मेंशेविक कहलाये। अल्पमत में होने की वजह से पार्टी संस्थाओं के चुनाव के दौरान मेंशेविक अपनी मनमानी नहीं कर पाये। कांग्रेस के बाद मेंशेविकों ने कांग्रेस के फैसलों की अवहेलना करनी शुरू कर दी। लेनिन ने कांग्रेस के दौरान और उसके बाद मेंशेविकों द्वारा की जा रही कारगुजारियों का भंडाफोड़ अपनी पुस्तक 'एक कदम आगे दो कदम पीछे' में किया।

पार्टी नियमावली की धारा एक के ऊपर कांग्रेस में लेनिन और मार्तोव के अलग-अलग मसौदे थे। इस संबंध में लेनिन लिखते हैं :

> "मेरे मसौदे की पहली धारा इस प्रकार थी : "पार्टी सदस्य वह है जो पार्टी के कार्यक्रम को स्वीकार करता है, जो पार्टी की धन से तथा पार्टी के किसी संगठन में वैयक्तिक रूप से भाग लेकर, दोनों तरह सहायता करता है। "
>
> कांग्रेस में मार्तोव ने इस रूप में पहली धारा पेश की थी और इसी रूप में वह कांग्रेस द्वारा स्वीकार की गयी :
>
> "रूसी सामाजिक जनवादी पार्टी का सदस्य वह है जो उसके कार्यक्रम को स्वीकार करता है और उसके किसी संगठन के निर्देशन में पार्टी की नियमित रूप से व्यक्तिगत मदद करता है।" (पृष्ठ -60, एक कदम आगे, दो कदम पीछे, लेनिन, प्रगति प्रकाशन, 1985)

ऊपरी तौर पर दोनों मसौदे एक जैसे लगते हैं। दोनों मसौदे समान रूप से पार्टी कार्यक्रम की स्वीकार्यता और नियमित आर्थिक योगदान को सदस्यता की शर्त के रूप में रखते हैं। सक्रियता के मामले में जहां लेनिन का मसौदा किसी पार्टी संगठन में मौजूद रहकर उसके अनुशासन में सक्रियता की मांग करता था जबकि मार्तोव का मसौदा ऐसे किसी अनुशासन को गैर जरूरी बताता था। यह फर्क इतना बड़ा फर्क था कि इससे तय होता था कि एक मजबूत और गठी हुई पार्टी बनेगी या फिर एक बिखरी हुई पार्टी। लेनिन लिखते हैं :

> "सच तो यह है कि संगठनात्मक प्रश्नों पर अवसरवादियों का पूरा रुख मजबूत और गठे हुए पार्टी संगठन के बजाय एक बिखरे हुए संगठन की पैरवी, पार्टी का निर्माण करने में ऊपर से नीचे की ओर बढ़ने और पार्टी कांग्रेस तथा उसके द्वारा स्थापित की गयी संस्थाओं से आरंभ करने के विचार का ("नौकरशाही" विचार का) विरोध; उनकी नीचे से ऊपर की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति, जो हर प्रोफेसर, हर स्कूली विद्यार्थी और "हर हड़ताली" को अपने को पार्टी का सदस्य घोषित करने का हक दे देगी; उस "औपचारिकता से बैर जो मांग करती है कि हर पार्टी मेम्बर को पार्टी से मान्यता प्राप्त किसी न किसी संगठन में शरीक होना चाहिए; उस पूंजीवादी बुद्धिजीवी की मनोवृत्ति की ओर झुकाव जो "संगठनात्मक संबन्धों को केवल भावात्मक रूप में ही मानने को" तैयार होता है, अवसरवादी गूढ़ता और अराजकतावादी शब्दावली इस्तेमाल करने का शौक; केन्द्रीयतावाद के मुकाबले में स्वायत्तावाद की ओर रुझान, संक्षेप में वह सब कुछ जो आजकल नये 'इस्क्रा' के स्तंभों में इतनी इफरात के साथ फल फूल रहा है- पहली धारा वाले विवाद के समय ही सामने आने लगा था और इस समय वह केवल उस पहली गलती की पूर्ण एवं स्पष्ट व्याख्या करने के कार्य को अधिकाधिक सुगम बना रहा है। (पृष्ठ-7, वही)

मेंशेंविक उस हर व्यक्ति को पार्टी सदस्यता देने की वकालत करते थे जो कि इसकी चाहत करता था। वे कहते थे कि इस तरह से ज्यादा से ज्यादा बड़ी पार्टी बनाकर पार्टी की पहुंच बढ़ाई जा सकती है। उनके अनुसार एक कसी हुई पार्टी जेलखाने की तरह हो जायेगी जिसमें बुद्धिजीवी लोग नहीं रह सकेंगे। मेंशेविकों के तर्कों को लेनिन अपनी पुस्तक 'एक कदम आगे, दो कदम पीछे' में उद्धृत करते हैं :

> "कामरेड अक्सेलरोद ने एक ऐसे प्रोफेसर की मिसाल दी जो अपने को सामाजिक जनवादी समझता है और कहता है"
> (पृष्ठ - 80, वही)
>
> "कामरेड अक्सेलरोद ने आगे कहा :"अगर हम लेनिन का मसौदा अपनाते हैं तो हम ऐसे लोगों के एक हिस्से को उठाकर अलग फेंक देंगे, जो सीधे-सीधे संगठन के भाग न होते हुए भी पार्टी के सदस्य हैं।" (पृष्ठ - 81, वही)
>
> "सबसे पहले जाहिर है हम पार्टी के सबसे अधिक सक्रिय तत्वों का, क्रांतिकारियों का संगठन बनायेंगे : लेकिन चूंकि हमारी पार्टी एक वर्ग की पार्टी है, इसलिए हमें यह एहतियात बरतना पड़ेगा कि कोई ऐसे लोग पार्टी के बाहर न छूट जायें जो कि शायद बहुत सक्रिय रूप से तो नहीं, पर सचेतन रूप से पार्टी का साथ देते हैं।"
> (पृष्ठ - 82, वही)

"मार्तोव ने कहा कि "पार्टी के सदस्य की उपाधि का जितना अधिक प्रसार होगा उतना ही अच्छा है"। (पृष्ठ - 84, वही)

"मार्तोव ने कहा : "हमें तो खुशी ही होगी यदि हर हड़ताली, हर प्रदर्शनकारी, अपने कामों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हुए, अपने को पार्टी सदस्य घोषित कर सके" (पृष्ठ - 84, वही)

मेंशेविक पार्टी के संबंध में जिस तरह के सांगठनिक ढांचे की वकालत कर रहे थे, उसके खतरों को लेनिन भली भांति देख रहे थे। लेनिन ने हर तरह से इन खतरों के प्रति पार्टी के लोगों को आगाह किया। लेनिन के शब्दों में :

"जब मैं कहता हूं कि पार्टी को **संगठनों का जोड़** (केवल साधारण गणित वाला जोड़ नहीं बल्कि एक जटिल जोड़) होना चाहिए, तब क्या उसका मतलब यह है कि मैं पार्टी और संगठन जैसी दो अलग-अलग अवधारणाओं को "एक में मिला देता हूं? हरगिज नहीं! इन शब्दों के द्वारा तो मैं अपनी यह इच्छा, यह मांग बहुत स्पष्ट और दो टूक शब्दों में व्यक्त कर देता हूं कि वर्ग का अग्रदल होने के नाते पार्टी को यथासंभव अधिक से अधिक संगठित होना चाहिए और अपनी पांतों में पार्टी को केवल ऐसे तत्वों को भर्ती करना चाहिए जिनमें **कम से कम एक अल्पतम मात्रा में संगठित होने की क्षमता हो**। (पृष्ठ - 78-79, वही, जोर मूल में)

"और सचमुच दो में से एक बात ही संभव है। या तो संगठित सामाजिक जनवादी इस प्रोफेसर को सामाजिक जनवादी मानते हैं-और उस हालत में फिर वे इन प्रोफेसर साहब को किसी सामाजिक जनवादी संगठन में शामिल क्यों नहीं करते? ... ... और यदि संगठित सामाजिक जनवादी लोग प्रोफेसर महोदय को सामाजिक जनवादी नहीं मानते, तो उस हालत में प्रोफेसर साहब को पार्टी सदस्य जैसी सम्मानित और उत्तरदायित्वपूर्ण उपाधि का प्रयोग करने देना बेकार, निरर्थक और हानिकारक होगा।" (पृष्ठ - 81, वही)

"यदि केवल उन्हीं संगठनों के सदस्य पार्टी के सदस्य माने जाते हैं जो पार्टी के संगठन समझे जाते हैं, तो भी जो लोग "सीधे-सीधे" पार्टी के किसी संगठन के सदस्य नहीं हो सकते, वे भी किसी ऐसे संगठन में काम कर सकते हैं जो पार्टी संगठन न हो, मगर पार्टी से संबंधित हो। इसलिए किसी को उठाकर अलग फेंकने का इस अर्थ में कोई सवाल नहीं उठता कि उसे काम करने से और आंदोलन करने से रोक दिया जायेगा। (पृष्ठ - 82, वही)

"इस तथ्य से कि हम एक वर्ग की पार्टी हैं, कैसे, किस दलील से यह निष्कर्ष निकलता है कि जो पार्टी में **शामिल** हैं और जो पार्टी **का साथ** देते हैं, उनमें कोई भेद नहीं करना चाहिए? असलियत इसकी ठीक उलटी है : क्योंकि लोगों की चेतना और क्रियाशीलता का स्तर अलग-अलग होता है, ठीक इसीलिए यह जरूरी है कि पार्टी के साथ उसकी निकटता में भेद किया जाय। (पृष्ठ - 82, वही, जोर मूल में)

"क्या इस बात से इन्कार किया जा सकता है कि पार्टी के जो सदस्य किसी संगठन के अंग नहीं हैं, उन पर नियंत्रण रखने की बात महज एक कोरी कल्पना है? और यदि किसी कोरी कल्पना का बहुत प्रसार हो जाये तो उससे लाभ नहीं, हानि ही होती है।

(पृष्ठ - 84, वही)

"यदि हम अपने को और दूसरों को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करेंगे कि पूंजीवाद में "अशिक्षित" और अनिपुण मजदूरों के व्यापक हिस्सों को जिस अन्तहीन फूट, दमन और कुंठा का अवश्यम्भावी रूप से शिकार होना पड़ता है, उसके बावजूद **हर हड़ताली** सामाजिक जनवादी और सामाजिक जनवादी पार्टी का सदस्य **हो** सकता है तो हम आत्मप्रवंचना और दिवा-स्वप्नों से मन बहलाने की गलती करेंगे।" (पृष्ठ - 84-85, वही, जोर मूल में)

"सामाजिक जनवादी पार्टी बनने के वास्ते जरूरी है कि हम ठीक **वर्ग** का समर्थन प्राप्त करें। जरूरत इस बात की नहीं है कि षड्यंत्रकारी संगठन पार्टी से घिरा हो- जैसा कि कामरेड मार्तोव सोचते हैं, बल्कि इस बात की है कि पार्टी क्रांतिकारी वर्ग से, सर्वहारा वर्ग से घिरी हो और पार्टी में षड्यंत्रकारी तथा गैर षड्यंत्रकारी दोनों प्रकार के संगठन हों।" (पृष्ठ - 86, वही, जोर मूल में)

"जहां तक अलग-अलग व्यक्तियों का-इन तमाम प्रोफेसरों, हाई स्कूल के विद्यार्थियों, आदि का-सम्बन्ध है उनके लिए किसी तरह की रियायत करना मुझे कतई पसन्द नहीं है, लेकिन यदि मजदूरों के संगठनों के बारे में किसी तरह का शक जाहिर किया जाता, तो (बावजूद इसके कि इस तरह के शक की कोई बुनियाद नहीं है ... ...) मैं पहली धारा के अपने मसौदे में यह टिप्पणी जोड़ देने के लिए तैयार हो जाता कि "ऐसे मजदूर संगठनों को, जो रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी के कार्यक्रम और नियमावली को स्वीकार करते हैं, बड़ी से बड़ी संख्या में पार्टी संगठनों में शाामिल कर लेना चाहिए।" (पृष्ठ- 100, वही)

इस तरह लेनिन ने मेंशेविकों के खिलाफ संघर्ष चलाते हुए ऐसे सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जो कि पार्टी के सांगठनिक उसूल बने। लेनिन के अनुसार पार्टी को वर्ग के साथ घालमेल नहीं करना चाहिए। पार्टी वर्ग के सबसे आगे बढ़े हुए हिस्सों को लेकर, वर्ग चेतन हिस्सों को लेकर बनती है। पार्टी में शामिल लोग अपने को समूह के मातहत रखते हैं और पार्टी के फैसलों को मानते हैं। पूंजीवादी बुद्धिजीवियों का व्यक्तिवाद उन्हें इस चीज की इजाजत नहीं देता। इसलिए उन्हें ऐसा अनुशासन गुलामी लगता है। लेकिन मजदूर वर्ग पूंजीवादी बुद्धिजीवियों के इस रोग को कोई रियायत नहीं देगा। पार्टी मजदूर वर्ग के अन्य सभी संगठनों को रास्ता दिखाने का काम करती है। यह इसके लिए तभी संभव हो पाता है जबकि वर्ग के सबसे आगे बढ़े हुए और वर्ग संघर्ष में तपे हुए लोग इसका हिस्सा होते हैं। पार्टी अपने वर्ग से सजीव रिश्ता रखती है। यह अपने वर्ग से समर्थन हासिल कर जीवित और विकसित होती है। अगर पार्टी गैर पार्टी अवाम के साथ संबंध कायम न करे और अपने खोल में बंद हो जाय तो वह खत्म हो जायेगी। पार्टी केन्द्रीयता के उसूलों

पर चलती है और पार्टी कांग्रेस और उसमें चुनी हुई संस्थाओं के फैसले पूरी पार्टी पर लागू होते हैं। इस तरह पूरी पार्टी के लिए एक समान नियम और अनुशासन के द्वारा पार्टी अपनी एकता कायम रखती है।

समय के साथ बोल्शेविकों और मेंशेविकों के बीच सांगठनिक उसूलों संबंधी मतभेद के अलावा कार्यनीति संबंधी मतभेद भी पैदा हो गये।

II

1905 में रूस में क्रांतिकारी उभार आया। मजदूर आर्थिक हड़तालें और हमदर्दी में हड़तालें करने से आगे बढ़कर राजनीतिक हड़तालें, प्रदर्शन और कहीं-कही पर जारशाही फौज का मुकाबला करने लगे। क्रांति ने समाज के सभी वर्गों को गतिशील बना दिया था। क्रांतिकारी उथल-पुथल की स्थिति में हर वर्ग और हर पार्टी ने अपनी कार्यनीति, अपने काम की लाइन, दूसरे वर्गों की तरफ अपना रुख और हुकूमत की तरफ अपना रवैया अपनाने की कोशिश की।

इन हालात में बोल्शेविकों और मेंशेविकों दोनों ने अपनी-अपनी कार्यनीति तय की। जैसा कि बोल्शेविक क्रांतिकारी धारा का प्रतिनिधित्व और मेंशेविक अवसरवादी धारा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, इसी अनुरूप बोल्शेविकों ओर मेंशेविकों की कार्यनीतियां क्रमशः क्रांतिकारी और अवसरवादी कार्यनीति थी।

लेनिन ने अपनी पुस्तिका 'जनवादी क्रांति में सामाजिक जनवाद की दो कार्यनीतियां' में मेंशेविकों और बोल्शेविकों दोनों की कार्यनीतियों की तुलना की। मेंशेविकों के सम्मेलन ने कार्यनीति के संबंध में जो प्रस्ताव लिए उसकी कुछ प्रमुख बातें इस प्रकार थीं :

> "जारशाही पर क्रांति की निर्णायक विजय या तो इस शक्ल में होगी कि एक अस्थायी सरकार की स्थापना हो जाये, जो विजयी जन-विद्रोह में से उत्पन्न होगी, या क्रांतिकारी पहलकदमी किसी न किसी ऐसी प्रतिनिधि संस्था के हाथ में आ जाये जो जनता के सीधे क्रांतिकारी दबाव में सार्वजनिक संविधान सभा स्थापित करने का फैसला करे। (पृष्ठ-36, सं.र., लेनिन, दस खंडों में, खंड 3, प्रगति प्रकाशन, 1981)
>
> "दोनों ही सूरतों में इस प्रकार की विजय क्रांतिकारी युग की एक नयी अवस्था का उद्घाटन करेगी।
>
> "इस नयी अवस्था में सामाजिक विकास की वस्तुपरक परिस्थितियों के कारण जो काम अपने आप सामने आ गया है, वह है राजनीतिक मामलों में मुक्त बुर्जुआ समाज के तत्वों के बीच अपने सामाजिक हितों की तुष्टि के लिए और सीधे-सीधे सत्ता प्राप्त करने के लिए होने वाले आपसी संघर्ष की प्रक्रिया में समस्त सामंती श्रेणी-विभाजन और राजतांत्रिक शासन व्यवस्था का अंतिम रूप से उन्मूलन।
>
> "इसलिए जो अस्थायी सरकार इस क्रांति के अपने ऐतिहासिक चरित्र के कारण ही बुर्जुआ क्रांति के कार्यभारों को पूरा करने का जिम्मा लेगी, उसे मुक्त होते हुए राष्ट्र के विरोधी वर्गों के पारस्परिक संघर्ष का नियमन करते हुए न केवल क्रांतिकारी विकास को और आगे बढ़ाना होगा, बल्कि उसके उन तत्वों के खिलाफ लड़ना भी होगा, जिनसे पूंजीवादी व्यवस्था की नींव के लिए खतरा पैदा होता है। " (पृष्ठ 43-44, वही)
>
> "ऐसी परिस्थितियों में सामाजिक जनवाद को क्रांति के पूरे अर्से में ऐसी स्थिति बनाये रखने की कोशिश करनी चाहिए, जो उसके लिए क्रांति को और आगे बढ़ाने की संभावना सबसे अच्छे ढंग से सुनिश्चित कर दे, बुर्जुआ पार्टियों की असंगत तथा स्वार्थी नीति के खिलाफ संघर्ष में उसके हाथ न बांध दे और उसे बुर्जुआ जनवाद में विलीन हो जाने से बचाये रखे।
>
> "इसलिए सामाजिक जनवाद को अस्थायी सरकार में सत्ता ग्रहण करने या उसमें हिस्सा बंटाने का लक्ष्य अपने सामने नहीं रखना चाहिए, बल्कि उसे चरम क्रांतिकारी विरोध-पक्ष की पार्टी बने रहना चाहिए।" (पृष्ठ 50-51, वही)
>
> "मान लीजिये कि हम जेम्सकी सोबोर की ओर कोई ध्यान नहीं देते, बल्कि स्वयं विद्रोह की तैयारियां आरंभ कर देते हैं और एक दिन इस लड़ाई के लिए सशस्त्र होकर सड़कों पर निकल आते हैं। नतीजा यह होगा कि हमारा मुकाबला एक नहीं, बल्कि दो शत्रुओं से होगा : सरकार से और जेम्सकी सोबोर से। जब तक हम तैयारियां करते रहेंगे, तब तक वे सौदा तय कर चुके होंगे, आपस में समझौता कर चुके होंगे, अपने लिए सुविधाजनक संविधान तैयार कर चुके होंगे और सत्ता आपस में बांट चुके होंगे। यह कार्यनीति सीधे-सीधे सरकार के हित में है और हमें उसे पूरे जोर के साथ ठुकरा देना चाहिए..."
>
> (पृष्ठ-74, वही)
>
> "... ... ... सम्मेलन का विश्वास है कि यदि सामाजिक- जनवादियों ने अस्थायी सरकार बनायी या यदि वे ऐसी सरकार में शरीक हुए तो उसका नतीजा एक ओर तो यह होगा कि सर्वहारा अवाम सामाजिक जनवादी पार्टी से निराश हो जायेंगे और उसे त्याग देंगे, क्योंकि सामाजिक जनवादी सत्ता पर अधिकार कर लेने के बावजूद मजदूर वर्ग की तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकेंगे, जिनमें समाजवाद की स्थापना भी शामिल है ... ... और दूसरी ओर, **इसके फलस्वरूप बुर्जुआ वर्ग क्रांति से मुंह फेर लेंगे और इस प्रकार उसकी व्यापकता को कम कर देंगे।**" (पृष्ठ 114, वही, जोर मूल में)

मेंशेविकों की कार्यनीति के अनुसार क्रांति की मंजिल पूंजीवादी जनवादी होने की वजह से इसका नेतृत्व उदारपंथी पूंजीपति वर्ग को करना चाहिए। मजदूर वर्ग को इस क्रांति में उदारपंथी पूंजीपति वर्ग का समर्थन करना चाहिए। मजदूर वर्ग को ज्यादा क्रांतिकारी जोश नहीं दिखाना चाहिए क्योंकि इससे उदारपंथी पूंजीपति वर्ग डर जायेगा और क्रांति कमजोर पड़ जायेगी। जारशाही पर क्रांति की

विजय बगैर जन-विद्रोह के किसी संविधान सभा बन जाने की सूरत में भी हो सकती है। अस्थायी सरकार में सामाजिक जनवादियों को नहीं शामिल होना चाहिए क्योंकि इससे बुर्जुआ वर्ग क्रांति से मुंह फेर लेगा और क्रांति की व्यापकता कम हो जायेगी। मजदूर वर्ग को किसानों के साथ एकता कायम करने का या उसे क्रांति के लिए उभारने का कोई प्रयास नहीं करना चाहिए। सामाजिक जनवादियों को पूंजीवादी जनवादी क्रांति के दौरान पहलकदमी नहीं लेनी चाहिए, अन्यथा इसके बुर्जुआ जनवाद में विलीन हो जाने का खतरा है।

स्पष्ट है कि मेंशेविकों ने इस क्रांति के दौरान अपनी भूमिका परिस्थितियों के विश्लेषण करने तक सीमित रखी। इनकी कार्यनीति मार्क्स के इस कथन के विरोध में जाती थी कि सवाल दुनिया की महज व्याख्या करने का नहीं, बल्कि दुनिया बदलने का है। उनकी सुधारवादी सोच किसी अधिकार विहीन संविधान सभा को भी क्रांति की जीत समझने की गलती तक ले जाती थी।

इसके बरक्स लेनिन और बोल्शेविकों की कार्यनीति मजदूरों और किसानों पर भरोसे पर आधारित थी। वे मजदूर वर्ग के नेतृत्व में मजदूरों और किसानों के अधिनायकत्व के अलावा अन्य किसी भी स्थिति को क्रांति की विजय के रूप में नहीं देखते थे। उनका मानना था कि उदारपंथी पूंजीपति वर्ग जारशाही के पूर्ण खात्मे तक नहीं जायेगा क्योंकि वह मजदूरों और किसानों से डरता है और जारशाही का इस्तेमाल इनके विरोध में करना चाहेगा। इसलिए उदारपंथी पूंजीपति वर्ग क्रांति का नेतृत्व नहीं कर सकता। एकमात्र मजदूर वर्ग ही ऐसा वर्ग था जो कि क्रांति को विजय तक ले जाने में सक्षम था। अगर पूंजीपति वर्ग क्रांति से अलग हो जाता है तो क्रांति की व्यापकता कम नहीं होगी, बल्कि और बढ़ जायेगी। इसलिए मजदूर वर्ग को उदारपंथी पूंजीपति वर्ग की परवाह किये बगैर क्रांति को ऊंचे से ऊंचे स्तर पर ले जाना चाहिए और उदारपंथी पूंजीपति वर्ग के अवसरवाद को उजागर करना चाहिए। अगर स्थितियां अनुकूल हों तो सामाजिक जनवादियों को क्रांतिकारी अस्थायी सरकार में शामिल होना चाहिए और प्रतिक्रांतिकारी प्रयासों को ऊपर (सरकार के द्वारा) और नीचे (जनता के हथियारबंद संगठन के द्वारा) दोनों तरफ से निष्फल करना चाहिए। पूंजीवादी जनवादी क्रांति पूंजीपति वर्ग के लिए तो फायदेमंद होती ही है, लेकिन एक खास अर्थ में उससे ज्यादा मजदूर वर्ग के लिए फायदेमंद है, क्योंकि इसके क्रांतिकारी तरीके से पूरा होने से वह समाजवादी क्रांति की तरफ तेजी से बढ़ सकता है। लेनिन लिखते हैं :

> "संभव है कि रूसी क्रांति की परिणति "सांविधानिक गर्भपात" में हो, ... परंतु क्या इस बात से उस सामाजिक जनवादी की हरकत को उचित ठहराया जा सकता है, जो एक निर्णायक संघर्ष की पूर्वबेला में इस विफलता को "जारशाही पर निर्णायक विजय" कहे? (पृष्ठ 42, वही)
>
> "अस्थायी क्रांतिकारी सरकार क्रांति की तात्कालिक विजय के लिए, क्रांति विरोधी कोशिशों को तत्काल विफल करने के लिए संघर्ष का उपकरण होती है, वह किसी भी प्रकार आम तौर पर बुर्जुआ क्रांति के एतिहासिक लक्ष्यों की सिद्धि का उपकरण नहीं होती।
>
> ... ...
>
> "यह कथन कि अस्थायी सरकार को विरोधी वर्गों के पारस्परिक संघर्ष का "नियमन" करना होगा, बहुत ही अनुपयुक्त है, या कम से कम बहुत ही भौंड़े तरीके से प्रस्तुत किया गया है : मार्क्सवादियों को ऐसी उदारतावादी 'ओस्वोबोज्देनिये'-पंथी प्रस्थापनाओं का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, जो इस तरह सोचने का कारण प्रस्तुत करती है कि ऐसी सरकारें भी हो सकती है, जो वर्ग संघर्ष के उपकरणों के रूप में नहीं, बल्कि उसके "नियामकों" के रूप में काम करती है ... ... (पृष्ठ 49, वही)
>
> "यही कारण है कि **बुर्जुआ** क्रांति **सर्वहारा वर्ग के लिए अधिकतम हितकर** है। बुर्जुआ क्रांति सर्वहारा वर्ग के हित में **नितांत** आवश्यक है। बुर्जुआ क्रांति जितनी ही अधिक पूर्ण तथा निश्चयात्मक, जितनी ही अधिक सुसंगत होगी, बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ समाजवाद के लिए सर्वहारा वर्ग का संघर्ष भी उतना ही सुनिश्चित होगा। ... ... फिर इसी निष्कर्ष में से और बातों के अलावा यह प्रस्थापना निकलती है कि **एक खास अर्थ में** बुर्जुआ क्रांति बुर्जुआ वर्ग की अपेक्षा सर्वहारा वर्ग के लिए **अधिक हितकर** होती है। (पृष्ठ 58, वही)
>
> "एक वर्ग के रूप में सर्वहारा वर्ग की जो स्थिति होती है, वही उसे सुसंगत रूप से जनवादी होने पर मजबूर करती है। बुर्जुआ वर्ग जनवादी प्रगति से डरकर, जिसमें सर्वहारा वर्ग के मजबूत होने का खतरा पैदा हो जाता है, पीछे की ओर देखता है।
>
> ... ...
>
> "बुर्जुआ जनवाद दो प्रकार का होता है। जेम्स्त्वो का वह राजतंत्रवादी कार्यकर्ता भी बुर्जुआ जनवादी है, जो संसद में ऊपरी सदन के पक्ष में होता है और जो सार्विक मताधिकार "मांगता" है पर आंख बचाकर चुपके-चुपके जारशाही के साथ एक सीमित संविधान के बाबत सौदेबाजी भी करता रहता है। और वह किसान भी बुर्जुआ जनवादी है, जो हाथ में हथियार लेकर जमींदारों तथा नौकरशाहों के खिलाफ लड़ रहा है और जो बहुत ही "भोली जनतंत्रवादी भावना" के साथ "जार को निकाल बाहर करने" का सुझाव रखता है।
>
> (पृष्ठ-60-61, वही)
>
> "या तो (1) परिणाम यह होगा कि "जारशाही पर क्रांति की निर्णायक विजय" होगी, या (2) ये शक्तियां निर्णायक विजय के लिए अपर्याप्त होंगी और सारा मामला जारशाही और बुर्जुआ वर्ग के सबसे अधिक "असंगत" तथा सबसे अधिक "स्वार्थी" तत्वों के बीच सौदा होकर खत्म हो जायेगा।
>
> ... ...
>
> "जारशाही पर क्रांति की निर्णायक विजय" **सर्वहारा वर्ग तथा किसानों का क्रांतिकारी जनवादी अधिनायकत्व** है।
>
> ... ...

"यदि बुर्जुआ वर्ग जारशाही के साथ समझौता करके रूसी क्रांति को विफल करने में कामयाब हो जाता है, तो सामाजिक जनवाद असंगत बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ लड़ाई में अपने हाथ वास्तव में बंधे हुए पायेगा, सामाजिक जनवाद अपने आपको इस अर्थ में बुर्जुआ जनवाद में "विलीन" पायेगा कि सर्वहारा वर्ग क्रांति पर अपनी स्पष्ट छाप डालने में सफल नहीं हो पायेगा ... ...

(पृष्ठ- 64-68, वही, जोर मूल में)

"विरोध-पक्ष" की अवधारणा को, जो ऐसी राजनीतिक स्थिति का प्रतिबिंब तथा अभिव्यक्ति बन गयी है, जिसमें कोई भी गंभीरतापूर्वक **विद्रोह** की बात नहीं करता, बिना सोचे-समझे एक ऐसी परिस्थिति पर लागू किया जाता है, जिसमें विद्रोह **आरंभ हो चुका है** और जिसमें क्रांति के सभी समर्थक उसके नेतृत्व के बारे में सोच रहे हैं और बातें कर रहे हैं।

... ...

"एक ऐसे प्रस्ताव में जो "क्रांति की निर्णायक विजय" और "जन विद्रोह" के उल्लेख से आरंभ होता है, बड़ी धूमधाम से "चरम विरोध पक्ष" का नारा पेश करने से अधिक हास्यास्पद कोई दूसरी बात नहीं हो सकती (पृष्ठ 92-93, वही, जोर मूल में)

इस तरह मेंशेविकों के बरक्स लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों की कार्यनीति जनता की क्रियाशीलता का आह्वान करती थी। बोल्शेविकों की कार्यनीति की दो विशेषताएं थीं : पहली जनवादी क्रांति की मंजिल में मजदूर वर्ग की नेतृत्वकारी भूमिका और दूसरी जनतंत्र हासिल करने के लिए जनता के सशस्त्र विद्रोह पर भरोसा करना। बोल्शेविकों का मानना था कि जनता को विद्रोह की तरफ ले जाने के लिए ऐसे नारे दिये जायें, ऐसी अपीलें निकाली जायें, ऐसे आह्वान किये जायें जिनसे मजदूरों और किसानों की पहलकदमी खुलती हो। बोल्शेविकों की कार्यनीति ऐसी थी जो कानूनों, अधिकारियों, रूढ़ियों की परवाह नहीं करती थी। मेंशेविकों की तरह बोल्शेविक संसदीय जड़वामनता के शिकार नहीं थे। मेंशेविकों ने भी माना था कि 1905 की क्रांति के दौरान मजदूर बोल्शेविकों के प्रभाव में थे।

बोल्शेविकों और मेंशेविकों के बीच कार्यनीति संबंधी मतभेदों का कारण दोनों की क्रांति को लेकर अलग-अलग सोच में था। यद्यपि दोनों ही क्रांति की दो अलग-अलग मंजिल को स्वीकार करते थे, लेकिन इन दोनों मंजिलों के अंतर्संबंधों के बारे में जहां मेंशेविकों की समझ धुंधली ओर पिच्छलग्गूपन वाली थी वहीं इसके बारे में बोल्शेविकों की समझ स्पष्ट और मजदूर वर्ग की स्वतंत्र पहलकदमी पर आधारित थी।

मेंशेविकों का मानना था कि रूस अभी पूंजीवादी-जनवादी क्रांति की मंजिल में है। रूस का मजदूर वर्ग अभी कमजोर और पिछड़ा हुआ है। निरंकुश जारशाही की अवस्था में यह ऐसा ही बना रहेगा। मजदूरों के भीतर शासन करने की क्षमता पैदा हो इसके लिए जनवादी गणतंत्र की जरूरत होगी। लेकिन अपनी कमजोरी की वजह से यह अकेले जनवादी गणतंत्र हासिल करने की लड़ाई नहीं लड़ सकता। इसलिए जनवादी गणतंत्र हासिल करने के लिए मजदूर वर्ग को उदापंथी पूंजीपति वर्ग पर निर्भर रहना चाहिए। उदारपंथी पूंजीपति वर्ग ही पूंजीवादी जनवादी क्रांति का नेता होगा। वही जन विद्रोह का नेतृत्व करेगा। सामजिक जनवादियों का काम है कि उदारपंथी पूंजीपति वर्ग से सहयोग करें और संविधान सभा बुलाये जाने के लिए दबाव बनाने तक अपने को सीमित रखें। जब रूस में जनवादी गणतंत्र कायम हो जाएगा तब एक लंबे समय में मजदूर वर्ग विकसित होते हुए इस स्थिति में पहुंचेगा कि शासन व्यवस्था अपने हाथ में ले सके। मजदूर वर्ग के इस अवस्था में पहुंचने से पहले अगर सामाजिक जनवादी शासन सत्ता अपने हाथ में लेते हैं तो वे बुर्जुआ जनवाद में विलीन हो जायेंगे यानी कि सर्वहारा की पार्टी नहीं रह जायेंगे।

बोल्शेविकों के सर्वहारा एवं किसानों के संयुक्त अधिनायकत्व का मेंशेविकों ने विरोध किया। मेंशेविकों ने सवाल उठाया कि क्या मजदूरों और किसानों के बीच इच्छाशक्ति की अनन्यता है? मेंशेविकों का कहना था कि चूंकि किसान निजी संपत्ति के मालिक होते हैं, इसलिए मजदूरों और किसानों के बीच एकता नहीं हो सकती। मेंशेविकों ने बोल्शेविकों पर आरोप लगाया कि मजदूरों और किसानों के अधिनायकत्व की बात कर वे मार्क्स और एंगेल्स द्वारा पूंजीवादी जनवादी क्रांति और समाजवादी क्रांति की दो अलग-अलग मंजिल संबंधी बातों की अवहेलना कर रहे हैं। लेनिन ने मेंशेविकों के इस आरोप को गलत बताते हुए कहा :

" ... ... संसार की अन्य सभी चीजों के तरह ही सर्वहारा वर्ग तथा किसानों के क्रांतिकारी-जनवादी अधिनायकत्व का भी अतीत और भविष्य है। उसका अतीत है एकतंत्र, भूदासता, राजतंत्र तथा विशेषाधिकार। इस अतीत के विरुद्ध संघर्ष में, प्रतिक्रांति के विरुद्ध संघर्ष में सर्वहारा वर्ग तथा किसानों की "इच्छा अनन्य" हो सकती है, क्योंकि इस मामले में हितों की एकता है।

उसका भविष्य है निजी मिल्कियत के खिलाफ संघर्ष, मालिक के खिलाफ उजरती मजदूर का संघर्ष, समाजवाद के लिए संघर्ष। इस मामले में इच्छा की अनन्यता असंभव है। इस मामले में हमारा मार्ग एकतंत्र शासन से जनतंत्र की ओर नहीं, बल्कि निम्न बुर्जुआ जनवादी जनतंत्र से समाजवाद की ओर जानेवाला मार्ग है।

ठोस ऐतिहासिक परिस्थितियों में अतीत के तत्व बेशक भविष्य के तत्वों के साथ घुल-मिल जाते हैं, दोनों रास्ते एक दूसरे को काटते हैं। उजरती श्रम और निजी मिल्कियत के खिलाफ उसका संघर्ष एकतंत्र शासन में भी मौजूद रहता है, वह भूदासता के अंतर्गत भी उत्पन्न होता है। परंतु यह बात किसी भी प्रकार हमें विकास की मुख्य मंजिलों के बीच तार्किक तथा ऐतिहासिक भेद करने से नहीं रोकती। हम सभी बुर्जुआ क्रांति तथा समाजवादी क्रांति को एक-दूसरे के विरुद्ध खड़ा करते हैं, हम सभी उनके बीच बहुत सख्ती के साथ भेद करने की नितांत आवश्यकता पर जोर देते हैं; परंतु क्या इस बात से इंकार किया जा सकता है कि इतिहास में दोनों क्रांतियों के अलग-अलग **खास-खास** तत्व आपस में घुल मिल जाते हैं?"

(जनवादी क्रांति में सामाजिक जनवाद की दो कार्यनीतियां, पृष्ठ-102-103, संकलित रचनाएं, दस खंडों में, खंड-3 प्रगति प्रकाशन, मास्को)

मेंशेविकों के विपरीत बोल्शेविकों का मानना था कि रूस का मजदूर वर्ग सबसे आगे बढ़े हुए उत्पादन संबंधों का प्रतिनिधित्व करने, बड़ी फैक्ट्रियों में भारी संख्या में संकेन्द्रित होने और अपनी क्रांतिकारी पार्टी के द्वारा नेतृत्व दिए जाने की वजह से रूस का सबसे अधिक क्रांतिकारी वर्ग है। यह पूंजीवादी जनवादी क्रांति के दौरान किसानों के साथ एकता कायम कर और उदारपंथी पूंजीपति वर्ग के अवसरवाद को निष्फल करते हुए जारशाही का खात्मा कर मजदूरों और किसानों का अधिनायकत्व कायम करेगा और फिर उसके बाद मजदूर वर्ग किसानों के सबसे गरीब हिस्सों के साथ एकता कर मध्यम किसान आबादी के ढुलमुलपन को निष्फल करते हुए पूंजीपति वर्ग के खिलाफ क्रांति कर मजदूर वर्ग का अधिनायकत्व कायम करेगा। जैसा कि ऊपर उद्धृत हिस्से से स्पष्ट है लेनिन 1905 में ही बुर्जुआ जनवादी क्रांति और समाजवादी क्रांति के एक दूसरे से बिलकुल अलग-थलग होने के बजाय इनके कई घटकों के एक दूसरे में अंतर्गुंथित होने की बात करते थे। आगे चलकर, लेनिन ने पूंजीवादी जनवादी क्रांति और समाजवादी क्रांति के अंतर्संबंधों की समझ को और विकसित करते हुए बताया कि पूंजीवादी जनवादी क्रांति होने के बाद यह बिना रुके समाजवादी क्रांति में संक्रमित कर जाती है।

बोल्शेविकों और मेंशेविकों, दोनों से अपने को अलग दिखाते हुए ट्राट्स्की ने 1905 में जारशाही नहीं, मजदूरों की सरकार का नारा दिया। ट्राट्स्की ने पूंजीवादी जनवादी क्रांति और समाजवादी क्रांति की दो अलग-अलग मंजिल की बात को ठुकरा दिया। ट्राट्स्की ने किसानों की किसी भी तरह की क्रांतिकारी भूमिका स्वीकार करने से इंकार कर दिया। ट्राट्स्की द्वारा मजदूरों और किसानों के बीच क्रांतिकारी सहयोग से इंकार करना वास्तविकता में मजदूरों की नेतृत्वकारी भूमिका से इंकार करना था। इस तरह, व्यवहारतः, ट्राट्स्की और मेंशेविकों की कार्यदिशा एक ही थी।

1905 की रूसी क्रांति का अन्त पराजय में हुआ। इसके बावजूद क्रांति के इन तीन वर्षों (1905-1908) में जनता ने जितना सीखा वह शांतिकाल के तीस वर्षों में भी संभव नहीं था। 1905 की क्रांति के प्रशिक्षण की वजह से रूस के मजदूरों और किसानों ने 1917 में दो सफल क्रांतियों को अंजाम दिया।

III

1905 की क्रांति की पराजय के बाद स्तोलिपिन प्रतिक्रियावाद का दौर शुरू हुआ। जनता पर खास तौर पर मजदूर वर्ग पर दमनात्मक तौर तरीके आजमाये जाने लगे। क्रांतिकारी मजदूरों की सूचियां बनायी गयीं और एक बार किसी मजदूर का नाम ऐसी सूची में आ जाने पर किसी खास धंधे के कारखानेदारों के संघ में उसे काम नहीं मिल सकता था। मजदूरी में कटौती की गयी और काम के घंटे बढ़ा दिये गये।

1905 की क्रांति की पराजय के बाद सामाजिक जनवादी संगठनों की पांतों में भी विघटन का सिलसिला शुरू हो गया। खास तौर से बुद्धिजीवियों में कई तरह की पलायन की प्रवृत्तियां दिखाई देने लगीं। प्रतिक्रियावाद के दौर में दो गैर सर्वहारा प्रवृत्तियां मजबूत हुईं : विसर्जनवाद और बहिष्कारवाद। विसर्जनवादी ऐसे मेंशेविक थे जिन्हें लगता था कि क्रांति का नया ज्वार फिर नहीं आयेगा। ये होशो हवास खोकर पीछे हटने लगे। उन्होंने क्रांतिकारी नारों से दूरी बना ली और क्रांतिकारी कार्यक्रम और गैर कानूनी पार्टी का विसर्जन करने का प्रयास करने लगे। विसर्जनवादी क्रांतिकारी कार्यक्रम को छोड़ने की कीमत पर जारशाही से मेलमिलाप करना चाहते थे और तथाकथित 'मजदूर' पार्टी कायम करना चाहते थे।

बहिष्कारवादी छिपे हुए विसर्जनवादी थे। ये अपने अवसरवाद को वामपंथी लफ्फाजी से छिपाना चाहते थे। इनकी मांग थी कि सामाजिक जनवादी कानूनी संस्थाओं और कानूनी संगठनों से बाहर आ जायें। ये इस तरह पार्टी और जनता के बीच दरार तो पैदा करते ही थे, साथ ही गैर कानूनी संगठन को भी खतरे में डालते थे।

बोल्शेविकों ने विसर्जनवाद और बहिष्कारवाद दोनों के खिलाफ संघर्ष करते हुए प्रतिक्रियावाद के इस दौर के लिए विशेष कार्यनीति विकसित की। बोल्शेविकों का मानना था कि क्रांति का नया ज्वार फिर आयेगा और वे अपना कर्तव्य समझते थे कि जनता को इसके लिए तैयार करें।

बोल्शेविकों ने अपने बुनियादी राजनीतिक उद्देश्यों में कोई बदलाव नही किये। ये वही रहे जो 1905 की क्रांति के दौरान थे, यानी जारशाही का खात्मा, पूंजीवादी जनवादी क्रांति को आखिरी मंजिल तक ले जाना और समाजवादी क्रांति की तरफ बढ़ना। लेकिन, नये दौर में पार्टी के कार्यनीति वही नहीं हो सकती थी जो 1905 के क्रांति के उठते हुए ज्वार के समय थी। अब, बोल्शेविकों की कार्यनीति व्यवस्थित तरीके से पीछे हटने की, अपनी शक्तियों को सुरक्षित करने की, और कानूनी मजदूर संगठनों में काम करने के साथ गैर कानूनी काम चलाने की थी।

जारशाही के दमन की परिस्थितियों में पार्टी का जनता के साथ संबंध टूट जाने का खतरा पैदा हो गया। जनता से संबंध कायम रखने के लिए बोल्शेविकों ने ट्रेड यूनियनों और दूसरी कानूनी तौर पर चलने वाली सार्वजनिक संस्थाओं, जैसे-रोगी सहायक सभा, मजदूरों की सहयोग समितियां, क्लब, शिक्षा सभाएं, जन सभाएं, इत्यादि में काम किया। बोल्शेविकों ने दूमा के मंच का भी इस्तेमाल किया। इस मंच से जारशाही की नीतियों का भंडाफोड़ किया, संवैधानिक जनवादियों के अवसरवाद को उजागर किया और सर्वहारा के

लिए किसानों का समर्थन हासिल करने का प्रयास किया। बोल्शेविकों ने अपना गैर कानूनी संगठन बरकरार रखा और इसके द्वारा क्रांति के नये उठान के लिए अपने आप को तैयार रखने के लिए सभी तरह का राजनीतिक काम किया।

जिन विकट स्थितियों में बोल्शेविक मजदूर आंदोलन को विकसित करने का प्रयास कर रहे थे, उसमें बहिष्कारवादियों की गतिविधियों से बहुत बाधा पैदा होती थी। इस वजह से बोल्शेविकों ने ऐलान किया कि उनमें और बहिष्कारवादियों में कोई साम्य नहीं है और उन्हें बोल्शेविक संगठन से निकाल दिया।

अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के लिए सही कार्यनीति विकसित करने के काम में लेनिन ने बहिष्कारवादियों के खिलाफ चले संघर्ष के अनुभव का इस्तेमाल किया। अपनी पुस्तक '"वामपंथी" कम्युनिज्म एक बचकाना मर्ज' में लेनिन लिखते हैं :

> "1908 में "वामपंथी" बोल्शेविकों को एक घोर प्रतिक्रियावादी "संसद" में भाग लेने की आवश्यकता को समझने की दृढ़ अनिच्छा के लिए हमारी पार्टी से निकाल दिया गया। "वामपंथियों" ने - जिनमें से कई बड़े अच्छे क्रांतिकारी थे, जो बाद में गौरव के साथ कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बने (और आज भी हैं)- विशेष रूप से 1905 के बहिष्कार के सफल अनुभव को आधार बनाया । अगस्त, 1905 में जब जार ने एक परामर्शदात्री "संसद" बुलाने की घोषणा की, तो बोल्शेविकों ने-सभी विरोधपक्षीय पार्टियों और मेंशेविकों के विरोध के बावजूद - उसका बहिष्कार करने की घोषणा की और सचमुच उस संसद को 1905 की अक्टूबर क्रांति बहा कर ले गयी। उस समय बहिष्कार करने की नीति इसलिए नही सही सिद्ध हुई थी कि प्रतिक्रियावादी संसद में भाग न लेना आम तौर से सही है, बल्कि इसलिए कि हमने उस वस्तु-स्थिति का सही मूल्यांकन किया था, जिसमें जनव्यापी हड़तालें बहुत तेजी से एक राजनीतिक हड़ताल में, फिर एक क्रांतिकारी हड़ताल में, अंत में एक विद्रोह में बदल रही थीं। इसके अलावा तब संघर्ष इस सवाल को लेकर चल रहा था कि पहली प्रतिनिधिपूर्ण संस्था को बुलाने का काम जार के हाथों में छोड़ दिया जाये, या पुराने शासन के हाथों से यह काम छीन लिया जाये। चूंकि इस बात का विश्वास नहीं था और न हो सकता था कि वस्तुस्थिति पहले जैसी ही होगी ओर घटनाओं का विकास ठीक उसी दिशा में और उसी गति से होगा, इसलिए बहिष्कार सही नहीं रह गया था।
>
> "1905 में "संसद" के बोल्शेविक बहिष्कार ने सर्वहारा वर्ग को यह दिखाकर बहुत ही मूल्यवान राजनीतिक अनुभव प्रदान किया कि संघर्ष के कानूनी और गैर कानूनी तथा संसदीय और गैर संसदीय रूपों को मिलाते हुए संसदीय रूपों को त्याग सकना कभी कभी लाभ दायक, यहां तक कि आवश्यक भी होता है। परंतु इस अनुभव को अंधों और नक्कालों की तरह, बिना कुछ सोचे समझे **दूसरी** परिस्थितियों और **दूसरे** हालात में लागू करना बड़ी भारी गलती है। 1906 में "दूमा" का बोल्शेविकों द्वारा बहिष्कार एक छोटी और आसानी से ठीक करने योग्य गलती थी। 1907, 1908 और बाद के वर्षों में दूमा का बहिष्कार करना बड़ी, मुश्किल से ठीक की जा सकने वाली गलती थी, जब एक ओर तो क्रांतिकारी लहर के बहुत तेजी से उठने और उसके विद्रोह में बदलने की आशा नहीं की जा सकती थी और जब दूसरी ओर काम के कानूनी और गैर कानूनी रूपों को मिलाने की आवश्यकता नवीकृत हो रहे बुर्जुआ राजतंत्र से पैदा पूरी ऐतिहासिक परिस्थिति में से उत्पन्न हो रही थी। आज जब हम पीछे मुड़कर बिलकुल समाप्त इस ऐतिहासिक काल पर, जिसका बाद के कालों से संबंध अब पूरी तरह प्रकट हो चुका है, नजर डालते हैं, तो यह बात खास तौर से साफ हो जाती है कि यदि बोल्शेविक डट कर लड़ते हुए इस मत की रक्षा न कर पाते कि संघर्ष के कानूनी और गैर कानूनी रूपों को मिलाकर **चलाना आवश्यक है** और एक ओर प्रतिक्रियावादी संसद तथा प्रतिक्रियावादी कानूनों से जकड़ी दूसरी अनेक संस्थाओं (बीमा कोष आदि) में भाग लेना **आवश्यक है**, तो 1908 से 1914 तक के काल में सर्वहारा वर्ग की क्रांतिकारी पार्टी के स्थायी केन्द्र को (मजबूत करना, बढ़ाना, विकसित करना तो दूर की बात है) अपने हाथ में रखना भी बोल्शेविकों के लिए **असंभव हो जाता**। (पृष्ठ 266-267, सं.र., लेनिन, दस खंडों में खंड-9, प्रगति प्रकाशन, 1985, जोर मूल में)
>
> "यह बेहूदा सिद्धान्त कि कम्युनिस्टों को प्रतिक्रियावादी ट्रेड यूनियनों में काम नहीं करना चाहिए, इस बात को एकदम स्पष्ट कर देता है कि "जनसाधारण" पर प्रभाव डालने के सवाल के प्रति इन "वामपंथी" कम्युनिस्टों का रवैया कितना सतही है, कि वे "जनसाधारण" की दुहाई का कितना दुरुपयोग करते हैं। "जनसाधारण" की सहायता कर सकने के लिए, "जनसाधारण" की सहानुभूति और समर्थन प्राप्त करने के लिए, आपको कठिनाईयों से नहीं डरना चाहिए, इस बात से नहीं घबराना चाहिए कि "नेता" (जो अवसरवादी और सामाजिक अंधराष्ट्रवादी होने के कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रायः बुर्जुआ वर्ग तथा पुलिस से संबंधित होते हैं) छिद्रान्वेषण करेंगे, रुकावटें डालेंगे, अपमान करेंगे तथा सतायेंगे, बल्कि **जहां भी जनसाधारण मिले वहीं जाकर अनिवार्यतः काम करना चाहिए।** (पृष्ठ- 288-289, वही, जोर मूल में)

इस तरह क्रांति के भाटे के दौर में बोल्शेविकों ने संघर्ष के कानूनी और गैरकानूनी तथा संसदीय और गैर संसदीय रूपों को मिलाने की कार्यनीति का बखूबी इस्तेमाल किया। बोल्शेविक कानूनी मजदूर संगठनों में भारी शक्ति बन गये। तीसरी और चौथी दूमा में औद्योगिक क्षेत्रों की मजदूर क्यूरियों से ज्यादातर बोल्शेविक प्रतिनिधि चुने गये। बोल्शेविकों ने अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी जनता से अपना जीवंत संबंध कायम रखा। इन सबने आगे चलकर मजदूर जनता के क्रांतिकारी आंदोलन की नयी उठान को रास्ता दिखाया।

IV

1912 से मजदूर आंदोलन में फिर से तेजी आई। बोल्शेविक लगातार कानूनी काम को गैर कानूनी कामों से मिलाते हुए अपने आधार का विस्तार कर रहे थे। प्राव्दा अखबार और दूमा मंचों से होने वाले राजनीतिक भंडाफोड़ ने क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं की एक

नयी पीढ़ी का प्रशिक्षण किया। यह प्रशिक्षण कितना उम्दा था इसका अंदाजा इस बात से लगता है कि जहां विश्व युद्ध छिड़ने के बाद तमाम पुरानी पार्टियों के लोग अंधराष्ट्रवाद की आंधी में बह गये, वहीं बोल्शेविक पार्टी ने युद्ध के खिलाफ जो सुसंगत कार्यनीति अख्तियार की, इसको हर तरह के खतरे को उठाते हुए बोल्शेविक कार्यकर्ता अमल में ला रहे थे।

1914 में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ने के बाद द्वितीय इंटरनेशनल का पतन हो गया। द्वितीय इंटरनेशनल के तमाम सूरमा बैसेल घोषणा पत्र को तिलांजली देकर 'पितृभूमि की रक्षा' में लग गये। रूस के सामाजिक जनवादियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा जो कि विसर्जनवादी कहलाते थे, ने भी युद्ध का विरोध करने की जहमत नहीं उठाई। इस दौर के अवसरवादियों के बारे में लेनिन अपने लेख 'समाजवाद और युद्ध' में लिखते हैं :

"1914- 1915 के महान यूरापीय युद्ध ने सभी यूरापीय सामाजिक जनवादियों के साथ ही रूसी सामाजिक जनवादियों को भी एक विश्वव्यापी पैमाने के संकट पर अपनी कार्यनीति की आजमाइश करने का अवसर दिया । अन्य सरकारों की अपेक्षा जारशाही के मामले में युद्ध का प्रतिक्रियावादी, दस्युतापूर्ण और गुलाम- मालिक स्वरूप कहीं अधिक ज्वलंत रूप में बेनकाब होता है। इसके बावजूद विसर्जनवादियों का मुख्य ग्रुप (हमारे ग्रुप के अतिरिक्त एकमात्र दूसरा ग्रुप, जिसका रूस में अपने उदारतावादी संबंधों की बदौलत गंभीर प्रभाव है) सामाजिक अंधराष्ट्रवाद की ओर चला गया। काफी लंबे अर्से से वैधता के एकाधिकार का उपभोग करते हुए इस 'नाशा जार्या' दल ने "युद्ध का विरोध न करने", त्रिराष्ट्र (अब चतुर्राष्ट्र) संधि की विजय कामना करने, जर्मन साम्राज्यवाद पर "अति पैशाचिक पापों" का अभियोग लगाने, आदि के पक्ष में प्रचार चलाया है। प्लेखानोव ने, जिन्होंने 1903 से बराबर अपनी घोर राजनीतिक ढुलमुलयकीनी तथा अवसरवाद की ओर स्थानांतरण के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, यही स्थिति और भी ज्यादा जोर के साथ अपनायी और उसके लिए वह रूस के सारे बुर्जुआ अखबारों के द्वारा प्रशंसित हुए। प्लेखानोव यह ऐलान करने की हद तक गिर गये हैं कि जारशाही न्याय संगत युद्ध चला रही है। वह इस हद तक गिर गये हैं कि उन्होंने इटली के सरकारी अखबारों में इंटरव्यू छपवाये हैं और उसे युद्ध में खींचने की कोशिश की है।

"यों इस बात की पूर्णतः पुष्टि हो गयी कि विसर्जनवाद का हमारा मूल्यांकन और अपनी पार्टी से विसर्जनवादियों के मुख्य ग्रुप का निष्कासन सही था। अब विसर्जनवादियों का असली कार्यक्रम और उनकी प्रवृत्ति का असली महत्व केवल आम अवसरवाद में ही नहीं, बल्कि महान राष्ट्र के प्रतिनिधियों के नाते रूसी जमींदारों तथा बुर्जुआ वर्ग के विशेषाधिकारों और लाभों की रक्षा में भी निहित है। यह **राष्ट्रवादी उदारतावादी** मजदूर नीति की प्रवृत्ति है। यह सर्वहारा समुदायों के खिलाफ "अपने" राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के साथ आमूलवादी टुटपुंजिया वर्ग के एक हिस्से और मुट्ठीभर विशेषाधिकार प्राप्त मजदूरों को गठजोड़ है। (पृष्ठ - 198-199, सं.र., लेनिन, दस खण्डों में, खण्ड-5, प्रगति प्रकाशन, 1982)

रूस के भीतर विसर्जनवादियों और समाजवादी क्रांतिकारियों ने सामाजिक अंधराष्ट्रवादी अवस्थिति अख्तियार की। इन्होंने युद्ध का विरोध न करने, युद्ध में अपने देश की जीत की कामना और दूसरे गुट के देशों को युद्ध के लिए जिम्मेदार ठहराने का काम किया। इन्होंने युद्ध की जिम्मेदारी से अपने देश के पूंजीपति को बरी कर दिया इन्होंने मजदूर वर्ग के गद्दार बनने की कीमत पर पूंजीपति वर्ग द्वारा पद-प्रतिष्ठा हासिल की।

छिपे हुए अंधराष्ट्रवादी या मध्यमार्गी भी मजदूर वर्ग के लिए कम खतरनाक नहीं थे। काउत्स्की, त्रात्स्की, मार्तोव आदि ऐसे ही मध्यमार्गी थे। ये खुले अंधराष्ट्रवादियों के पक्ष में तर्क गढ़ते थे। इनका यह कहना कि जब युद्ध कर्जों के लिए वोट लिए जायें तब तटस्थ रहा जाय, असलियत में युद्ध का समर्थन करना ही था। ये बोल्शेविकों की 'युद्ध के खिलाफ गृह युद्ध' छेड़ने की कार्यनीति का विरोध करते थे।

लेनिन ने सामाजिक अंधराष्ट्रवादियों का खंडन करते हुए ओर बोल्शेविकों की कार्यनीति का वर्णन करते हुए लिखा है :

"सामाजिक अंधराष्ट्रवाद वर्तमान युद्ध में "पितृभूमि की रक्षा" के विचार की वकालत है। इस विचार से आगे जन्मता है युद्ध के दौरान वर्ग संघर्ष का त्याग, युद्ध ऋणों के पक्ष में मतदान इत्यादि। दरअसल, सामाजिक अंधराष्ट्रवादी सर्वहारा विरोधी, बुर्जुआ नीति पर चल रहे हैं, क्योंकि वे वस्तुतः विदेशी जातियों के उत्पीड़न विरोधी संघर्ष के अर्थ में "पितृभूमि की रक्षा" की हिमायत नहीं कर रहे हैं, बल्कि उपनिवेशों को लूटने और दूसरी जातियों को उत्पीड़ित करने के लिए एक दूसरी "महान" शक्ति के "अधिकार" की हिमायत कर रहे हैं। (पृष्ठ-163, वही)

"अवसरवाद और सामाजिक अंधराष्ट्रवाद का वैचारिक राजनीतिक अंतर्य एक ही है : वर्ग संघर्ष के बजाय वर्ग सहयोग, संघर्ष के क्रांतिकारी तरीकों का त्याग, क्रांति के लिए "अपनी" सरकार की कठिनाईयों से फायदा उठाने के बजाय कठिनाई की स्थिति में उसकी सहायता। (पृष्ठ-168, वही)

"वर्तमान युद्ध में अपनी सरकारों की जीत के हामी तथा "न जीत, न हार" के नारे के हिमायती दोनों ही सामाजिक अंधराष्ट्रवादी दृष्टिकोण अपनाते हैं। क्रांतिकारी वर्ग प्रतिक्रियावादी युद्ध में अपनी सरकार की हार चाहे बिना और यह देखे बिना रह ही नहीं सकता कि उसकी सरकार की सैनिक असफलताओं के साथ उसका तख्ता उलटने की सहूलियत जुड़ी हुई है। (पृष्ठ - 173, वही)

"शांति के पक्ष में जनसाधारण की मनोदशा अकसर विरोध, क्रोध और युद्ध के प्रतिक्रियावादी स्वरूप की चेतना के प्रारंभ को अभिव्यक्त करती है। उस मनोदशा का इस्तेमाल करना सभी सामाजिक जनवादियों का कर्तव्य है। वे इस मनोदशा से जनित सभी आंदोलनों ओर सभी प्रदर्शनों में गरमजोशी के साथ भाग लेंगे, लेकिन इस विचार को मानकर वे जनता को धोखा नहीं देंगे कि क्रांतिकारी आंदोलन के अभाव में शांति समामेलनों के बिना, जातियों के उत्पीड़न के बिना, लूट के बिना, वर्तमान सरकारों तथा शासक वर्गों के बीच नए युद्धों के बीजाणुओं के बिना संभव हो सकती है। ... ... जो कोई भी स्थायी शांति चाहता है, उसे सरकारों तथा बुर्जुआ वर्ग के खिलाफ गृहयुद्ध का लाजिमी तौर से पक्षधर होना चाहिए।

खुले सामाजिक अंधराष्ट्रवादी युद्ध के संबंध में अपने देश की सरकारों के पक्ष में खड़े होते थे। वे मजदूरों का अपने वर्ग बंधुओं की हत्या करने के लिए आह्वान करते थे। मध्यमार्गी युद्ध के संबंध में तटस्थता की नीति अपनाते थे। वे साम्राज्यवाद और रक्त पिपासु सरकारों का डटकर विरोध करने के बजाय अपनी लड़ाइयों को स्थगित कर देते थे। शुद्ध शांतिवादी साम्राज्यवादी युद्धों का विरोध करने के साथ-साथ हर तरह के युद्धों का विरोध करते थे। उनके लिए युद्धों के वर्ग चरित्र का कोई प्रश्न नहीं था, न ही वे इस बात को समझते थे कि युद्धों के खात्मे के लिए पूंजीवाद-साम्राज्यवाद का खात्मा आवश्यक है।

इन सबके बरक्स युद्ध के सम्बन्ध में बोल्शेविकों की कार्यनीति एक सुसंगत क्रांतिकारी कार्यनीति थी। बोल्शेविकों का मानना था कि युद्ध दो तरह के होते हैं : न्यायपूर्ण युद्ध और अन्यायपूर्ण युद्ध। न्यायपूर्ण युद्ध उत्पीड़ित या पराधीन जनता द्वारा साम्राज्यवादी या विदेशी गुलामी के जुए से आजादी के लिए, पूंजीवादी शोषण से मुक्ति के लिए लड़े जाते हैं। अन्यायपूर्ण युद्ध कमजोर देशों को लूटने-खसोटने के मकसद से, पूंजीपति वर्ग के मुनाफे को बढ़ाने के मकसद से, अपने देश की जनता की आकांक्षाओं का दमन करने की शोषणकारी सरकारों की मंशा की वजह से लड़े जाते हैं।

बोल्शेविक पहले तरह के युद्ध का समर्थन तथा दूसरे तरह के युद्ध का विरोध करते थे। बोल्शेविकों का कहना था कि दूसरे तरह के युद्धों का विरोध करने के लिए जनता का आह्वान किया जाए, युद्धों को रोकने के लिए पूंजीवादी-साम्राज्यवादी व्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए जनता को सचेत किया जाए और युद्ध की परिस्थितियों का इस्तेमाल कर गृह युद्ध छेड़ा जाय। अपनी पुस्तक 'साम्राज्यवाद : पूंजीवाद की चरम अवस्था' में लेनिन ने दिखाया कि साम्राज्यवाद इजारेदारी वाला पूंजीवाद है। यह सड़ता हुआ पूंजीवाद है। इसमें वित्तीय पूंजी के प्रभुत्व और दुनिया के पुनर्बंटवारे की जरूरत युद्धों को लाजिमी बना देती है। साम्राज्यवाद के रहते जनता युद्धों से मुक्ति नहीं पा सकती है। मजदूर वर्ग ही पूंजीवाद-साम्राज्यवाद का खात्मा कर जनता को युद्धों की विभीषिका से मुक्त कर सकता है।

विश्व युद्ध के लंबा खिंचने पर रूस में जनता और सैनिकों के भीतर युद्ध के खिलाफ आक्रोश बढ़ता गया। शांति, रोटी, जमीन और आजादी के नारे के तहत 1917 के फरवरी (पुराने रूसी कैलेण्डर के अनुसार) माह में रूस में मजदूरों और सैनिकों ने जारशाही के खिलाफ क्रांति की। जनता ने युद्ध के संबंध में बोल्शेविकों की कार्यनीति पर अपनी मुहर लगा दी।

V

1917 की फरवरी क्रांति ने जारशाही का अंत कर दिया। यह पूंजीवादी-जनवादी क्रांति थी। इस क्रांति की पृष्ठभूमि में 1912-1914 की क्रांतिकारी लहर का उठान, प्रथम विश्व युद्ध का फूटना, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान संवैधानिक जनवादियों, समाजवादी क्रांतिकारियों और मेंशेविकों का अंधराष्ट्रवाद, युद्ध में जार के फौज को मिली शिकस्तें, युद्ध से मजदूरों और किसानों का तबाह बर्बाद होना और युद्ध के दौरान बोल्शेविकों द्वारा क्रांतिकारी अंतर्राष्ट्रीयतावाद का परिचय देते हुए युद्ध के खिलाफ गृहयुद्ध का नारा देना था। जारशाही का खात्मा करने में सारी की सारी भूमिका मजदूरों, किसानों और सैनिकों की थी। लेकिन समाजवादी क्रांतिकारी और मेंशेविकों के प्रभाव वाली सोवियतों की कार्यकारिणी समिति ने सत्ता पूंजीपतियों को सौंप दी। फरवरी क्रांति के बाद बनने वाली अस्थायी सरकार पूंजीपति वर्ग की सत्ता थी।

लेकिन पूंजीपति वर्ग की सत्ता के साथ-साथ एक दूसरी सत्ता मौजूद थी-मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियतें। सोवियतों में सैनिक प्रतिनिधि ज्यादातर किसान थे, जो युद्ध के शुरू में भर्ती किये गये थे। मजदूर और सैनिक प्रतिनिधियों की सोवियतें जारशाही के खिलाफ मजदूरों और सैनिकों के सहयोग की संस्था थी और साथ ही उनकी सत्ता की संस्था थीं, मजदूरों और किसानों के अधिनायकत्व की संस्था थीं।

इस तरह दुहरी सत्ता अस्तित्व में आई। अस्थायी सरकार जारशाही के जमाने की नीतियों को इस या उस बहाने जारी रखे हुए थी। मेंशेविक और समाजवादी क्रांतिकारी इस काम में अस्थायी सरकार का सहयोग कर रहे थे। क्रांति के द्वारा जनता ने जो जनवादी अधिकार जीते थे, अस्थायी सरकार उनको छीनने की साजिश करती थी। इस परिस्थिति से बाहर निकलने के लिए लेनिन ने अप्रैल थीसिस के नाम से मशहूर सैद्धान्तिक प्रस्थापनाएं दी।

अप्रैल थीसिस क्रांति के लिए और पार्टी के अगले काम के लिए भारी महत्व रखती थी। क्रांति देश के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण मोड़ थी। जारशाही के खात्मे के बाद, संघर्ष के जो नये हालात पैदा हुए, उसमें पार्टी के लिए एक नया दृष्टिकोण जरूरी था, जिससे कि वह हिम्मत और विश्वास के साथ नयी राह पर आगे बढ़ सके। लेनिन की इन स्थापनाओं ने पार्टी को सही दृष्टिकोण दिया। लेनिन की अप्रैल थीसिस के कुछ चुनिंदा हिस्से इस प्रकार हैं :

> "2- रूस में मौजूदा घड़ी की विलक्षणता यह है कि देश क्रांति की पहली मंजिल से, जिसने सर्वहारा वर्ग की अपर्याप्त वर्ग चेतना तथा उसके अपर्याप्त संगठन के कारण सत्ता बुर्जुआ वर्ग को सौंप दी थी, **दूसरी** मंजिल में **संक्रमण** कर रहा है, जिसे सत्ता सर्वहारा वर्ग तथा किसानों की सबसे गरीब श्रेणियों के हाथों में सौंपनी होगी।
>
> "इस संक्रमण की अभिलाक्षणिकता है एक ओर, अधिकतम वैधता (रूस इस समय विश्व के समस्त युद्धरत देशों में सबसे अधिक स्वतंत्र देश है), दूसरी ओर, जनसाधारण पर अत्याचार का अभाव और अंततः पूंजीपतियों की, शांति तथा समाजवाद के सबसे निकृष्ट शत्रुओं की सरकार में उनका विवेकहीन विश्वास।

"यह विलक्षणता हमसे यह अपेक्षा करती है कि हम सर्वहारा वर्ग के अश्रुतपूर्व से व्यापक समुदायों के बीच, जिनमें राजनीतिक जीवन की जागृति अभी-अभी हुई है, पार्टी कार्य की **विशेष** अवस्थाओं के अनुकूल अपने को ढालें।

"3- अस्थायी सरकार को कोई समर्थन नहीं, उसके तमाम वचनों की, विशेष रूप से समामेलनों के परित्याग से संबंधित वचनों की पूर्ण असत्यता स्पष्ट की जाये। अग्राह्य, भ्रम पैदा करने वाली इस "मांग" के कि **यह** सरकार, पूंजीपतियों की सरकार साम्राज्यवादी **न रहे**, बजाय उसका पर्दाफाश।

"4- इस तथ्य को स्वीकार करना कि अधिकांश मजदूर प्रतिनिधि सोवियतों में हमारी पार्टी बुर्जुआ वर्ग के प्रभाव के अंतर्गत आने वाले तथा उस प्रभाव को सर्वहारा वर्ग में फैलाने वाले **सारे** टुटपुंजियाई अवसरवादी तत्वों के, जन-समाजवादियों, समाजवादी- क्रांतिकारियों से लेकर संगठन समिति ('छेईद्जे, त्सेरेतेली, आदि), स्तेक्लोव, आदि आदि तत्वों तक के **गुट** के सामने अल्पसंख्या, अब तक कमजोर अल्पसंख्या में हैं।

"जनसाधारण को यह स्पष्ट किया जाये कि मजदूर प्रतिनिधि सोवियतें क्रांतिकारी सरकार का **एकमात्र संभव** रूप है, कि इसलिए हमारा कार्यभार, जब तक यह सरकार बुर्जुआ वर्ग के प्रभाव के अंतर्गत रहती है, जनसाधारण की कार्यनीति की गलतियों का धैर्यपूर्वक, क्रमबद्ध ढंग से, आग्रहपूर्वक इस तरह **स्पष्टीकरण करना** है, जो उनकी व्यावहारिक आवश्यकताओं के अनुकूल विशेष रूप से ढाला गया हो।

"जब तक हम अल्पसंख्या में हैं, हम गलतियेां की आलोचना तथा उनका पर्दाफाश करने का काम करते रहते हैं, साथ ही पूरी राज्य सत्ता मजदूर प्रतिनिधि सोवियत को स्थानांतरित करने की आवश्यकता का प्रचार करते हैं ताकि जनता अनुभव से अपनी गलतियों से छुटकारा पा सके।

"5-संसदीय जनतंत्र नहीं-मजदूर प्रतिनिधि सोवियत से संसदीय जनतंत्र की ओर लौटना पीछे की ओर पग होगा- अपितु पूरे देश में, नीचे से ऊपर तक मजदूर, खेत-मजदूर, किसान प्रतिनिधि सोवियतों का जनतंत्र। (पृष्ठ 315-316 , सं.र., लेनिन, खण्ड - 6, 10 खण्डों में, प्रगति प्रकाशन, 1983, जोर मूल में)

लेनिन ने इस थीसिस में बताया कि क्रांति पहली मंजिल से दूसरी मंजिल में संक्रमण कर रही है। नयी मंजिल में सत्ता मजदूरों तथा सबसे गरीब किसानों (अर्द्ध सर्वहारा) के हाथों में होगी। इस तरह पिछली मंजिल की तुलना में वर्गों की लामबंदी में तबदीली हो गई। पिछली मंजिल में क्रांति का उद्देश्य मजदूरों और किसानों का अधिनायकत्व कायम करना था। लेनिन ने अस्थायी सरकार से क्रांति के किन्ही भी मांगों को पूरा कर सकने की उम्मीद पालने या जनता में इस संबंध में भ्रम फैलाने का विरोध किया। इस तथ्य को स्वीकारते हुए कि सोवियतों में बोल्शेविक अल्पमत में हैं, लेनिन ने 'सारी सत्ता सोवियतों को दो' नारे के तहत धैर्यपूर्वक अवसरवादियों का पर्दाफाश करने और जनता को अपनी गलतियों से सीखने में मदद करने की कार्यनीति प्रस्तावित की।

अप्रैल थीसिस के ऊपर बोल्शेविकों में मतभेद पैदा हो गया। अप्रैल थीसिस पर आपत्ति करने वाले लोगों, जो अपने को 'पुराने बोल्शेविक' कहते थे, ने सवाल उठाया कि क्या क्रांति की पहली मंजिल पूरी हो चुकी है। उन्होंने पूंजीवादी जनवादी क्रांति के तमाम बचे हुए कार्यभारों का हवाला देते हुए क्रांति के दूसरी मंजिल में पहुंचने की बात का विरोध किया। इन्होंने पहले की कार्यनीति द्वारा बताए गए रास्ते कि पूंजीवादी-जनवादी कार्यभारों को पूरा करने के लिए अस्थायी सरकार पर दबाव बनाया जायेगा पर ही अड़े रहने की बात की। इन मतभेदों पर पार्टी ने खुली बहस चलाने और सम्मेलन में फैसला लेने का निर्णय लिया। इसी बहस के तहत अपने लेख 'कार्यनीति के बारे में पत्र' में लेनिन ने लिखा :

"तो फिर पहली मंजिल क्या है?

यह है राज्य-सत्ता का बुर्जुआ वर्ग के हाथों में पहुंचना।

1917 की फरवरी-मार्च क्रांति से पहले रूस में राज्य-सत्ता एक पुराने वर्ग, याने भूदास स्वामी-अभिजात-जमींदारों के हाथों में थी, जिसके शीर्ष स्थान पर निकालाई रोमानोव थे।

इस क्रांति के उपरांत सत्ता एक **भिन्न** वर्ग, एक नये वर्ग, याने **बुर्जुआ वर्ग** के हाथों में है।

राज्य-सत्ता का एक वर्ग के हाथों से दूसरे **वर्ग** के हाथों में पहंचना **क्रांति** का पहला, प्रमुख, बुनियादी लक्षण है, इस शब्द के जैसे बड़े वैज्ञानिक अर्थ में, वैसे ही अमली राजनीतिक अर्थ में।

इस हद तक रूस में बुर्जुआ-जनवादी क्रांति **सम्पन्न हो चुकी है।**

यहां हम आपत्ति करने वालों का शोरगुल सुनते हैं, जो अपने को सहर्ष "पुराने बोल्शेविक" नाम देते हैं : क्या हम सदैव यह नहीं कहते रहे कि बुर्जुआ जनवादी क्रांति केवल "सर्वहारा वर्ग तथा किसान समुदाय के क्रांतिकारी जनवादी अधिनायकत्व" द्वारा सम्पन्न होती है? क्या कृषि क्रांति-वह भी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति है-संपन्न हो चुकी है? क्या इसके विपरीत यह तथ्य नहीं है कि वह तो **अभी** शुरू तक **नहीं** हुई है?

मेरा उत्तर है : बोल्शेविक नारे तथा विचार **समग्र रूप में** इतिहास द्वारा पुष्ट हो चुके हैं, परन्तु **ठोस रूप में** हालात ने **और ही** शक्ल अख्तियार की, जितनी कोई भी अपेक्षा नहीं कर सकता था-उससे वे अधिक मौलिक, विलक्षण, विविधतापूर्ण हैं।

... ...

"मजदूर और सैनिक प्रतिनिधि सोवियत" यह है आपके सामने-यह है आपके सामने "सर्वहारा वर्ग तथा किसान समुदाय" का पहले ही घटनाओं द्वारा अमली जामा पहनाया जा चुका "क्रांतिकारी जनवादी अधिनायकत्व"।

(पृष्ठ- 327-328, वही जोर मूल में)

लेनिन की स्थापनाओं को बोल्शेविक पार्टी की सातवीं (अप्रैल) कान्फ्रेंस ने स्वीकार किया। अप्रैल कान्फ्रेंस के आधार पर आम जनता को अपनी तरफ करने के लिए उसे शिक्षित और संगठित करने के लिए पार्टी ने बड़े पैमाने पर काम किया। उस दौर में पार्टी की नीति यह थी कि धीरज से बोल्शेविक नीति समझा कर और मेंशेविकों तथा समाजवादी क्रांतिकारियों की समझौतावादी नीति का पर्दाफाश करते हुए इन पार्टियों को जनता से अलग कर दिया जाये और सोवियतों में बहुमत कायम किया जाये।

समय बीतने के साथ सोवियतों में बोल्शेविकों के समर्थक बढ़ने लगे। जुलाई प्रदर्शन के दमन के बाद बोल्शेविकों को पुनः भूमिगत होना पड़ा। अब क्रांति के द्वारा हासिल जनवादी अधिकार छीन लिए गये। इन स्थितियों में सोवियतों का अस्थायी सरकार का पुच्छल्ला बन जाना लाजिमी था। इसलिए बोल्शेविकों ने 'सारी सत्ता सोवियतों को दो' का नारा वापस ले लिया। लेकिन कार्निलोव के हमले को विफल करने के क्रम में पुनः सोवियतें बोल्शेविकों के आह्वान का पालन करने लगीं। कार्निलोव षड्यंत्र को विफल करने के बाद मजदूरों और किसानों में नयी जागृति आनी शुरू हुई। पेत्रोग्राद और मास्को सोवियतों ने बोल्शेविकों की नीति मंजूर की। किसानों द्वारा जागीरी जमीन पर कब्जा करने की घटनाएं बेहद बढ़ गयीं। समझौतावादी पार्टियां भीतर से टूटने लगीं। समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी और मेंशेविकों में 'वामपंथी' गुट बन गये।

इन स्थितियों में बोल्शेविकों ने विद्रोह की जोरदार तैयारियां शुरू की। अपने लेखों और केन्द्रीय कमिटी और बोल्शेविक संगठनों के नाम अपने खतों के द्वारा लेनिन ने पार्टी और मजदूर वर्ग को विद्रोह के लिए तैयार किया। अपने लेख मार्क्सवाद तथा विद्रोह' में लेनिन ने लिखा :

> "सफल होने के लिए विद्रोह को षड्यंत्र पर नहीं, एक पार्टी पर नहीं, अपितु आगे बढ़े हुए वर्ग पर निर्भर करना चाहिए। यह है पहली शर्त। विद्रोह को **जनता के क्रांतिकारी उभार पर** निर्भर करना चाहिए। यह है दूसरी शर्त। विद्रोह को संवर्धित होती जा रही क्रांति के इतिहास में उस **मोड़** पर निर्भर करना चाहिए, जब जनता की आगे बढ़ी हुई कतारों की क्रियाशीलता अधिकतम होती है, जब दुश्मन की कतारों में और **क्रांति** के **कमजोर, अधकचरे, संकल्पहीन मित्रों की कतारों में** ढुलमुलपन सबसे ज्यादा सशक्त होता है। यह है तीसरी शर्त। विद्रोह का प्रश्न प्रस्तुत करने में ये तीनों शर्तें **मार्क्सवाद को ब्लांकीवाद** से विभेदित करती है।"

(पृष्ठ 238-239, खंड 7, संकलित रचनाएं दस खंडों में, लेनिन, प्रगति प्रकाशन, मास्को, 1984)

इस लेख में आगे लेनिन ने बिन्दुवार साबित किया कि रूस के मौजूदा हालात तीनों शर्तों को पूरा करते हैं। लेनिन ने बार-बार विद्रोह के कला होने संबंधी मार्क्स के उद्धरण को याद दिलाया। मार्क्स के अनुसार विद्रोह की कला के कुछ नियम ये हैं :

(1) विद्रोह के साथ कभी मत खेलो, लेकिन एक बार इसे शुरू कर देने पर अपने आप को पूरी तरह झोंक दो।

(2) निर्णायक स्थान और निर्णायक क्षण में ताकत की विशाल श्रेष्ठता को केन्द्रित करो, अन्यथा दुश्मन, जिसके पास बेहतर तैयारी और संगठन है, विद्रोहियों को समाप्त कर देगा।

(3) एक बार विद्रोह शुरू हो जाने पर अधिकतम दृढ़ता के साथ कार्य करो और हर प्रकार से, बगैर चूके, आक्रमण करो। सुरक्षात्मक होना सभी सशस्त्र विद्रोह की मौत है।

(4) दुश्मन को चकित करो और जब दुश्मन की ताकत बिखरी हो, उस मौके को भुना लो।

(5) प्रतिदिन की सफलता, चाहे यह कितनी ही छोटी क्यों न हो, के लिए प्रयास करो और किसी भी कीमत पर "नैतिक श्रेष्ठता" बरकरार रखो।

इन सिद्धान्तों से लैस पार्टी की केन्द्रीय समिति की ऐतिहासिक बैठक हुई जिसमें अगले कुछ दिनों में सशस्त्र विद्रोह आरंभ करने का फैसला लिया गया। विद्रोह की शुरुआत पेत्रोग्राद से करने का फैसला लिया गया। साथ ही पूरे देश के स्तर पर विद्रोह का संगठन करने के लिए प्रतिनिधि भेजे गये।

7 नवम्बर (पुराने रूसी कैलेण्डर के अनुसार 25 अक्टूबर) को पेत्रोग्राद में सशस्त्र विद्रोह की विजय हुई। बोल्शेविकों ने रूस के नागरिकों के नाम एक घोषणापत्र निकाला जिसमें बताया गया कि अस्थायी सरकार हटा दी गयी है और सारी सत्ता सोवियतों के हाथ में आ गयी है।

स्टालिन ने अपने लेख 'द अक्टूबर रिवोल्यूशन एंड द टैक्टिक्स ऑफ द रसियन कम्युनिस्ट्स" में अक्टूबर क्रांति की तैयारियों के दौरान बोल्शेविकों की कार्यनीति की चार विशेषताएं बताईं।

बोल्शेविकों की कार्यनीति की पहली विशेषता थी एक पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी का क्रांति की तैयारियों पर अविभाजित नेतृत्व। जनता के क्रांतिकारी आंदोलन के स्वयंस्फूर्त उभार पर भरोसा करते हुए बोल्शेविक पार्टी ने अपना अविभाजित नेतृत्व बरकरार रखा। आंदोलन का नेतृत्व करने की वजह से यह अक्टूबर के उभार के लिए जनता की राजनीतिक सेना इकट्ठा कर सकी। अपनी बारी में इसने अक्टूबर क्रांति के बाद सत्ता को एक पार्टी बोल्शेविक पार्टी के हाथों में केन्द्रित किया।

बोल्शेविकों की कार्यनीति की दूसरी विशेषता मेंशेविक और समाजवादी क्रांतिकारी पार्टी को अलगाव में डालना था। बगैर इनको अलगाव में डाले बोल्शेविक पार्टी अपना अविभाजित नेतृत्व नहीं कायम रख सकती थी। ये पार्टियां समझौतापरस्त पार्टियां थीं और साम्राज्यवाद का सबसे खतरनाक सामाजिक आधार थीं। बोल्शेविकों के द्वारा इनके खिलाफ संघर्ष चलाने से और जनता के क्रांतिकारीकरण से जनता इनके खेमों से निकलकर क्रांति के खेमे में आ गयी।

बोल्शेविकों की कार्यनीति की तीसरी विशेषता सोवियतों को राज्य सत्ता के उपकरण में रूपांतरित करना था। राजसत्ता की बनी बनाई मशीनरी के द्वारा सर्वहारा सत्ता अपने पास नहीं रख सकता था। बोल्शेविकों ने सर्वहारा द्वारा सत्ता हासिल करने में सोवियतों के नये सत्ता के उपकरण के रूप में भूमिका को पहचाना और नारा दिया : "सारी सत्ता सोवियतों को दो!"। इस नारे के द्वारा बोल्शेविकों ने मेंशेविकों और समाजवादी क्रांतिकारियों को अलगाव में डाला। अपने आंतरिक विकासक्रम में "सारी सत्ता सोवियतों को दो!" का नारा दो चरणों से गुजरा। पहले चरण में इस नारे का मकसद मेंशेविक और समाजवादी क्रांतिकारियों की कैडेटों (पूंजीपति वर्ग की पार्टी) के साथ एकता को तोड़ना था। दूसरे चरण में सोवियतों में बोल्शेविकों का प्रभाव बढ़ जाने की वजह से इस नारे की अंतर्वस्तु गुणात्मक तौर पर बदल गयी। अब इस नारे का मतलब सीधे विद्रोह के द्वारा सर्वहारा की तानाशाही को संगठित करना बन गया।

बोल्शेविकों की कार्यनीति की चौथी विशेषता थी लाखों जनता को पार्टी के पक्ष में लाने के लिए जनता को उनके अनुभवों के द्वारा पार्टी के नारों से सहमत कराना। इसका एक उदाहरण संविधान सभा को बुलाए जाने की मांग रखना था। यद्यपि बोल्शेविक अप्रैल 1917 में ही सोवियतों के गणतंत्र का नारा प्रस्तुत कर चुके थे और संविधान सभा बुर्जुआ संसद होने की वजह से सोवियतों के गणतंत्र के सिद्धान्त के विरोध में जाती थी। तब भी जनता को, न सिर्फ हिरावल को, न सिर्फ मजदूर वर्ग की बहुसंख्या को बल्कि लाखों जनता को अपने नीतियों पर सहमत कराने के लिए संविधान सभा की मांग बोल्शेविकों ने रखी। इससे न सिर्फ अस्थायी सरकार का भंडाफोड़ हुआ बल्कि जनता संविधान सभा के प्रतिक्रियावादी चरित्र से वाकिफ हुई और इससे इसको भंग करने में मदद मिली।

VI

इस तरह 1883 से लेकर 1917 तक रूसी मार्क्सवादियों की कार्यनीति कई मोड़ों और घुमावों से गुजरी। इन सभी अलग-अलग चरणों में बोल्शेविकों ने परिस्थिति के अनुरूप अपने लिए कार्यनीति तय की और जनता के साथ अपने संबंधों को कायम रखने के साथ-साथ जनता के क्रांतिकारी आंदोलन को भी लगातार विकसित करते रहने का काम किया। इसी के अनुरूप आंदोलन के अलग-अलग चरण - 1883-1904 का पार्टी निर्माण का चरण, 1905-1908 का क्रांति का चरण, 1908-1912 का स्तोलिपिन प्रतिक्रियावाद का चरण, 1912-1914 के नए क्रांतिकारी उठान का चरण, 1914-1917 के विश्व युद्ध का चरण और फरवरी 1917 से अक्टूबर 1917 तक समाजवादी क्रांति के विकास का चरण- में बोल्शेविकों की कार्यनीति अलग-अलग थी। क्रांतिकारी आंदोलन के ये अनुभव अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की अमूल्य धरोहर हैं। आने वाली क्रांतियां इस अनुभव भंडार से सीखते हुए आगे बढ़ेंगी।

■■■